तुलु हास्य लघुकथाएँ

लेखक
डॉ. वामन नंदावर

हिन्दी अनुवाद
डॉ. स्मिता चिपलूनकर

कर्नाटक सरकार
कर्नाटक
तुलु साहित्य
अकादेमि

तुलु हास्य लघुकथाएँ

वामन नंदावर

अनुवाद
डॉ. स्मिता चिपलूनकर

करनाटक तुलु साहित्य अकाडेमि
मंगलूरु

TULU HASHYA LAGHU KATHAYE
A collection of tulu folk short stories by
Dr. Vamana Nandavara
Drishya, Gollachil, Derebail, Mangalore - 575 006
Mobile : 9448252698

Translated by
Dr. Smitha Chiploonkar
'Rashmi', Behind Bharath Printers, Post Kulashekara
Mangaluru - 575 005 Mobile : 9686869946

Publisher
Chandrahasa Rai B.
Registrar, Karnataka Tulu Sahitya Academy

Published by
Karnataka Tulu Sahitya Academy
Mangaluru - 575 006
Dakshina Kannada, Karnataka, INDIA
Tel : +91 824 2459389
Email : tulu.academy@yahoo.co.in

© Karnataka Tulu Sahithya Academy
First Impression : 2018
No. of copies : 500
Paper used : 80 gsm NS Maplitho   Size : Cr. 1/4
Pages : xii+48   Price : Rs. 75

Sketches & Cover Photo : **Tharanath Kairangal**
Cover Design : **Kallur Nagesh**

Designed & printed at :
Aakrithi Prints
Light House Hill Road, Mangaluru - 1
Phone : +91 824 2443002

वैविध्यपूर्ण हास्य लघुकथाएँ

देहात में दैनंदिन जीवन में घटित होनेवाली घटनाएँ बहुत ही रोचक होती हैं । घर के अंदर, परिवार में, घर के बाहर काम करते हुए, सामाजिक, धार्मिक आदि विविध प्रसंगों में देहात के लोग अपने बौद्धिक गुण अपने वार्तालाप तथा कार्यकलापों के द्वारा अद्भुत रीति से प्रकट करते ही रहते हैं । अपार जीवनानुभव से प्राप्त देहातियों की बोलचाल अपनी समय प्रज्ञा तथा सांदर्भिक विवेक से हमें चकित करती है । हास्य की रोशनी फैलाती है । देहातियों की कहावतें, मुहावरे, आस्थाएँ, आचरण, उनकी पहचान आदि उनकी जीवनशैली की विविधता के पीछे किसी न किसी लघुकथा का पटाखा अवश्य छुपा होता है ।

कवि, लोकसाहित्य के विद्वान तथा कथाकार डॉ. वामन नंदावर ने बचपन से लेकर अपने जीवन के विविध संदर्भों में जो-जो प्रसंग सुने उनकी पृष्ठभूमि के विवरणों को कथारूप में संजोकर पटाखों की माला के रूप में पिरोकर यहाँ प्रस्तुत किया है। तुलु जीवन शैली से प्राप्त ये ४२ हास्यप्रधान लघुकथाएँ उनकी मूलतः तुलु में लिखीं और फिर कन्नड़, अंग्रेज़ी तथा हिन्दी में अनुवादित कर संकलन के रूप में यहाँ प्रस्तुत की गयी हैं । ये ४२ वैविध्यपूर्ण हास्य लघुकथाएँ बच्चे व बड़े पढ़ें, स्वच्छंद होकर हँसें और आराम से बैठकर इन कथाओं के मध्य की बुद्धिमत्ता तथा समझदारी और नीतियों को समझकर उनका मनन करें यह आज के आधुनिक समाज के लिये अत्यधिक आवश्यक है । छोटी-छोटी परन्तु अर्थ में बहुत कुछ बतानेवाली ये कथाएँ तुलु, अंग्रेज़ी, कन्नड़ तथा हिन्दी के छोटे-बड़े सभी पाठकों के मन को मुदित और आह्लादित करें यह मेरी शुभकामना है । उम्र में बड़े हों या छोटे सबको समान रूप से अच्छी लगनेवाली ये ४२ वैविध्यपूर्ण हास्य लघुकथाएँ चार भाषाओं द्वारा चार दिशाओं में प्रसारित करनेवाले डॉ. वामन नंदावर का बहुत प्यार से मैं अभिनन्दन करता हूँ ।

मंगलूरु
१०-१-२०१८

प्रो. बि. ए. विवेक रै

The President's Words

It is with great sense of pride and pleasure that I write these words to introduce and commend the translation of ***Telike Nalikeda Kinya Kathekulu*** by Dr. Vamana Nandavara to Hindi by Dr. Smitha Chiploonkar. Tulu needs to draw upon the unlimited literary and cultural opulence from other tongues and cultures, while it should feel confident to present its own riches to the rest of the world. That, we are sure, will help us claim the rightful status of honour to Tulu and to those who speak that language. Such serious publications will enable us to stake Tulu's claims for inclusion in the Eighth Schedule of the Constitution.

Although serious Tulu Movement was launched in the 1930's under the leadership of S.U. Paniyadi, N.S. Kille, Polali Sheenappa Hegde and others and later many individuals and associations did yeoman's service for the Tulu cause, an institutional base and support was provided to it when Karnataka Tulu Sahitya Academy was established in 1994. Since then it has undertaken and coordinated several programmes like seminars, conferences, publications, awarding the worthies and so on. The Academy has kept the Tulu awareness alive. Successive Presidents of the Academy and their teams have been working on the ways of bringing together individual efforts of promoting Tulu in the region and outside.

I should clarify that all our talks about Tuluva identity and cultural riches suggest separatism. The region is spectacularly bilingual or multilingual. It has cultivated Kannada passionately and has accommodated other languages and their speakers generously. But the fact remains that in culturally Tulunadu, the language is Tulu. The majority here has Tulu as its mother-tongue. It also

has, for various geographical and historical reasons, evolved a Tulu culture, which is both unique and accommodating. While it is comfortable with the entrenched multilingual life, the continued non-recognition of Tulu leaves a bad taste in the mouth. To be told that it is one of the great five Dravidian languages and yet being consigned to political neglect reeks of cruel sarcasm. Hence this continued scream about Tulu's recognition and its inclusion in the Eighth Schedule of the Constitution.

The Tulu Academy wants to continue the long tradition of publishing Tulu works of substance, including journals and children's books. We want to pursue the work of popularising the study of Tulu at the school level and make it a worthy academic language. We plan to sponsor translations of books from other languages to Tulu and of Tulu works into other languages. This excellent translation of ***Telike Nalikeda Kinya Kathekulu*** into English with the title ***Tulu Hashya Laghu Kathaye*** blaze a new trail and inspire others to labour for the Tulu cause. I congratulate the original author Dr. Vamana Nandavara and the translator, Dr. Smitha Chiploonkar for their good work and thank them for allowing us the privilege of publishing it. I thank all the members of the Academy for supporting me in all my endeavours, including the publication of this work. I thank the Registrar of the Academy, Sri Chandrahasa Rai B, for helping me in the matter in every way. I thank Kallur Nagesh of Aakriti Prints for the neat and elegant printing of the book.

Mangaluru (Kudla)
20 January 2018

A.C. Bhandary
President
Karnataka Tulu Sahitya Academy

दो बातें – मन की गहराइयों से

तुलु मौखिक साहित्य परंपरा में विपुल मात्रा में अद्भुत, रम्य दन्तकथाएँ , कल्पकताएँ हैं । इसमें लोकप्रिय शूरवीरों का इतिहास है । ये सारी कथाएँ मैंने बचपन से ही सुनी–समझी हैं । विविध सन्दर्भों में इन कहानियों से मेरा परिचय करानेवाले पहलवान सेसप्प शे कृष्णापुरजी रामदास बिजै, के. ब्रह्मानन्द, बोम्मय्य कार्नाड़, मोहनदास सुरत्कल, मांगाजे बाबु और माँ पुवक्क, पिताजी बाबु बालेपुनि और मेरे सालेसाहब के.वि. चित्तरंजनदास आदि का यहाँ स्मरण करता हूँ ।

ये सभी कहानियाँ इससे पूर्व ही सुरत्कल के पुरवणि पत्रिके, मंगलूर मित्र, संजे अले, मीनावलि जैसी पत्रिकाओं में विभिन्न सन्दर्भों में धारावाही के रूप में प्रकाशित हुई थीं । इन सभी पत्रिकाओं के संपादकों का मैं आभारी हूँ।

मुझे लगता है नई पीढ़ी में तुलु भाषा, साहित्य तथा संस्कृति के प्रति अभिमान पैदा करने के उद्देश्य से यह कृति बहुत महत्वपूर्ण है । इनमें से कुछ कहानियाँ मेरी तुलुवेरे कुसाल कुसेल, तुलुटु पनिकते (१९८८) तथा ओंजि कोपे कतेकुलु (१९८८) कृतियों में प्रकाशित हो चुकी हैं ।

इन तुलु कहानियों का अनुवाद मैंने कन्नड़ भाषा में कर दिया है और अब नगे बगेय कतेगलु कृति मे ये प्रकाशित हो रही हैं । इतना ही नहीं ये कहानियाँ तुलु भाषा से अन्य भाषाओं में भी अनुवादित हों इस उद्देश्य से सेंट एग्नेस कॉलेज की हिन्दी प्राध्यापिका डॉ. श्रीमती स्मिता चिपलूनकरजी ने हिन्दी में तथा मूड़बिदिरे के एम आय टी ई इंजीनियरिंग कॉलेज के प्राध्यापक श्री सौरभजी

ने अंग्रेज़ी में इन्हें अनुवादित किया है । इसलिए इन दोनों का मैं आभारी हूँ । इस प्रक्रिया में डॉ. सायिगीता ने मुझे पूरा सहयोग दिया है इसलिये मैं उनका भी आभारी हूँ । इस तरह पाठकों को चार भाषाओं में ये कथायें पढ़ने को प्राप्त हुई हैं। ये लघुकथाएँ तो हैं ही साथ ही इन्हें चिंगारी कहानियाँ, छोटी कहानियाँ भी कहा जा सकता है। इसमें ४२ कहानियाँ संग्रहित होने के कारण इसे कहानी संग्रह कहना भी उचित ही होगा ।

इस 'वैविध्यपूर्ण हास्य लघुकथाएँ' कृति के लिये प्रस्तावना लिखी है मेरे मार्गदर्शक, हंपि विश्वविद्यालय तथा कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के माजी कुलपति प्रो. बि.ए. विवेक रै जी को भी मैं प्रीतिपूर्वक धन्यवाद देता हूँ । इस कृति को बिल्कुल सही ढंग से मुद्रित करनेवाले आकृति प्रकाशन के श्री कल्लूर नागेश व उनके कर्मचारी श्रीमती भारती, श्रीमती गायत्री तथा कुमारी नव्यश्री को भी मैं धन्यवाद देता हूँ। यह कृति हमारे हेमांशु प्रकाशन के ७६वें अंकुर के रूप में प्रकाशित हुई है ।

इन कृतियों को पढ़कर, उनकी विमर्शा करनेवाली मेरी पत्नी श्रीमती चंद्रकला नंदावर, पुत्री हेमश्री तथा पुत्र सुधांशु, बहू दीप्ति तथा इन्हें पढ़वाकर सुननेवाले साहित्याभिमानी जामाता भाष और प्रकाशन के सारे पाठकों को भी बड़े प्यार से धन्यवाद देता हूँ । अपने खिलौनों के साथ इन पुस्तकों को भी संजोकर रखनेवाले उनसे खेलनेवाले अपने प्यारे पोते मेराकि और पोती हिरण्या को बड़े प्यार से चूमता हूँ ।

मंगलूरु **वामन नंदावर**

१०-१-२०१८

परिविडि

1. हो सके तो बताओ, नहीं तो जाने दो 1

2. मंत्रित खंजर 2

3. न धन मिला न स्त्री 3

4. मारिमंदिर के पास एक गोलाकार चबूतरा 4

5. छिलकाभर चिड़वा कौन खाएगा? 5

6. भूत पकड़ लो ! दण्ड वसूल कर लो 6

7. मज़ाक बन गया मुश्किल 7

8. आपके मवेशियों में एक भैंसे ने पड़वा दिया है और उसे सूँघ रहा है 8

9. क्या मैं यह पूरा खा डालूँ? 9

10. सासू जी की बात सुनती हूँ तो मेरे पेट में आग लग जाती है 10

11. सासू जी को फिरसे परोसने आयी बहू 11

12. मैं इस घर की प्रमुख स्त्री हूँ समझे 12

13. ऊख चुरानेवाले जारु को देखो 13

14. गुस्सा भट्ट जी पर और नहाने के लिए पानी नहीं 14

15. पिताजी कहीं नहीं, मुर्गी के बाड़े में भी नहीं 15

16. 'नेंट" को बाँधकर रखो ! 'दोण्णे' को ढूँढो! 16

17. शादीवाले घर में भाँजेराजा पर दोहरा संकट 17

18. इसके ऊपर का भी मेरा, नीचे का भी मेरा ही ! 19

19. धान के छिलकों से डोर बना दो 21

20. दो का दूल्हा, सिरपर टोपी 22

21. जैसे एंकु पणंबूर गया 23

22. आचक्का सोयी है; मैं बैठा हूँ! 24

23. तुम्हारे पेट का एक हिस्सा हमेशा खाली रहे 25

24. रस्सी को खाकर पूछ रही है रस्सी कहाँ है 27

25. बंग और चौटा के बारे में जानकर तुझे क्या मिलेगा मेरे बेटे! तू बस एक बार खाना ले मेरे लाड़ले ! 29

26. बड़े भैया को शनिवार, कुतिया को फलाहार, सासूजी को मार ही मार 30

27. वैद्यजी के हाथ का गुण 31

28. मनुष्य से भी बढ़कर कोई बड़ा भूत है? 32

29. खाते ही सोना चाहिए, उठते ही खाना चाहिए 33

30. समारोह में दिखाये गये गहने 35

31. धोबी का हाथ शुद्ध, ब्राह्मण का मुँह शुद्ध 36

32. बैलगाड़ी में स्त्री की पोषाक 37

33. मांत्रिक मादप्पय्या और ब्रह्मराक्षास 38

34. तीन बार स्नान, एक बार भोजन 39

35. किससे प्यार –पत्नी से या बच्चों से? 40

36. कुष्ठ रोगी बना सियार 41

37. सियार की मन्नत 42

38. तुम्हें याद करते ही मृत्यु ! 44

39. कुदुंबळु पक्षी ने आवाज़ दी 45

40. इसमें से बचा तो चार नहीं तो तीन 46

41. लोकरक्षक केकड़ा 47

42. ऊख खाकर आने के लिए कहा तो चने खाकर आ गया। 48

हो सके तो बताओ, नहीं तो जाने दो

जब हमारे लोग एकत्रित होते हैं तो वहाँ का माहौल बड़ा खुशनुमा हो जाता है । कोई मज़ाक कर लेते हैं कोई कहानी सुनाने लग जाते हैं ।

एक बार एक बढ़ई लकड़ी का कोई काम कर रहा था । तब वहाँ आसपास के लोग जमा हो गये । उस समय इस बढ़ई को एक मज़ाक करने की सूझी ।

उस बढ़ई ने उन सबसे ऐसे ही एक सवाल किया "मैं किस जाति की लकड़ी का काम कर रहा हूँ बताओ तो ज़रा" वहाँ जमा हुए लोग उस लकड़ी को ध्यान से देखने लगे । एक ने कहा यह 'हलसु' की लकड़ी है, तो दूसरे ने कहा यह 'हेब्बलसु' की लकड़ी है, फिर किसी ने कहा यह 'बीटि' है । बढ़ई बोला "नहीं इनमें से कोई नही ।"

कुछ समय तक लोग सोचते रहे फिर भी बता न पाए । तब बढ़ई बोला "तीरंड पनले इज्जिंड **बुडले**" (साध्यवादरे हेळि इल्लदिद्दरे बिडि) फिर एक बार उसने वैसे ही कहा तब कुछ लोग समझ गए कि वह तो उत्तर का संकेत दे रहा है । वह 'बुड़ले' जाति की लकड़ी का ही काम कर रहा था ।

विशेष सूचना –

(1) (साध्यवादरे हेळि इल्लदिद्दरे बिडि) कहानी का शीर्षक ऐसा दिया गया है । हिन्दी में 'ळ' अक्षर नहीं है और उसके बदले 'ल' का प्रयोग किया जाता है | परन्तु कन्नड़ और तुलु भाषा में 'हेळि' के बदले 'हेलि' लिखने पर बहुत भारी अर्थ परिवर्तन हो जाता है । इसलिए यहाँ संस्कृत का 'ळ' लिखना आवश्यक था । (2) 'हलसु' = कटहल की लकड़ी, 'हेब्बलसु'=जंगली कटहल की लकड़ी , 'बीटि' और 'बुड़ले' जंगल में प्राप्त होनेवाली और बढ़ई के लिए काम के लिए आवश्यक विशिष्ट जाति के पेड़ की लकड़ी (3) तीरंड पनले इज्जिंड **बुडले** = समझ में आए तो बता दो नहीं तो छोड़ दो (4) बुड़ले = एक प्रकार की लकड़ी

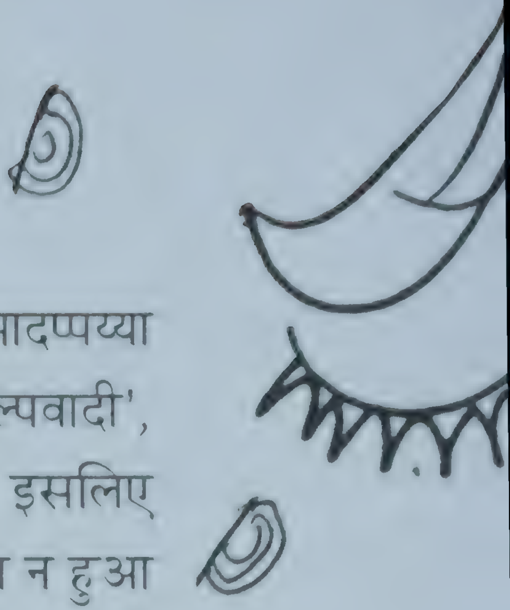

मंत्रित खंजर

कोई सौ वर्ष पूर्व एक बहुत बड़े मांत्रिक थे । उनका नाम था मादप्पय्या । लोगों की दृष्टि में वे बहुत प्रभावी व्यक्ति थे जिन्हें आदरपूर्वक 'कल्पवादी', 'कारणिक' भी कहा जाता था । उनका अपना कोई घर नहीं था । इसलिए रात बिताने के लिए किसी स्मशान या जिस घर का अभी गृहप्रवेश न हुआ हो ऐसे घर चले जाते और वहाँ ज़मीन पर ही सो जाते थे । सूखे पत्ते ही बिछाकर अपने लिए बिस्तर बना लेते । कोई उन्हें प्रणाम करता तो उसे प्रतिप्रणाम न कर केवल 'तेरा उद्धार हो' कहते। वे निश्चित समय देखकर ही नहाने के लिए पानी में उतरते और उसी तरह एक निश्चित समय देखकर ही पानी से बाहर आते । हर दिन एक सेर चावल पकाते और उसमें से आधा पाव जानवरों को खिलाते और पात्र के सबसे नीचेवाला आधा पाव मछलियों को खिला देते थे । कभी कभार यदि छोटे-छोटे बच्चे वहाँ आ जाते तो पके चावल की एक-एक मूठ का निवाला उन्हें भी दे देते थे । इसी तरह निरंतर दो बरसों तक उनके हाथों से खाना खाकर बड़े हुए लोगों की संख्या भी कम न थी । वहाँ पास ही 'अदुर्कु' नामक पहाड़ी थी । वहाँ घास के ढेर पर वे सो रहे थे । उन्हें लगा हो सकता है खूँखार बाघों की जोड़ी आ जाए । यह विचार आते ही मादप्पय्याने एक खंजर मंत्रित कर अपने सिरहाने रख दिया । वहाँ घास लेने जो आये थे उन्होंने बाघों को देखा और जाकर वे एक बंदूक उठा लाये । उन्हें लगा कि शायद तब तक मादप्पय्या को बाघों की जोड़ी ने खा डाला होगा । जब हाथ में बन्दूक लिए वे वहाँ पहुँचे तब मादप्पया ने उन्हें रोकते हुए कहा "ज़रा रुकिए, मत मारिए उन्हें ।" फिर उन्होंने अपने सिरहाने से मंत्रित किया हुआ खंजर उठाया और उसे बाघों के सामने फेंक दिया । क्या आश्चर्य ! दोनों बाघ वहाँ से भाग गए । पता नहीं कहाँ चले गए ! पर इतना निश्चित था कि बन्दूक लेकर आये सब लोग इस आँखों देखे हाल से दंग रह गए ।

वि.सू. – कल्पवादी, कारणिक जैसे शब्दों को मंत्रों के द्वारा सिद्धिप्राप्त मनुष्य, प्रभुता प्राप्त व्यक्ति के अर्थ में लिया जाए ।

न धन मिला न स्त्री

एक गाँव था। उस गाँव का एक राजा था। एक दिन उस राजा के राज्य में एक बाघ घुस आया और उसने पूरे गाँव में होहल्ला मचा दिया। लोगों को उससे अपने आपको बचाना मुश्किल हो गया। इसलिए गाँववालों ने मिलकर राजा से उस बाघ की शिकायत की और उसे मार डालने के बारे में प्रार्थना की। लेकिन राजा उस बाघ को मारने में असमर्थ रहा। इसलिए उसने राज्य में घोषणा करवाई कि, "जो भी इस गाँव में घुस आये बाघ को मारकर उसके दाँत और नाखून लाकर देगा, मैं उसे अपनी बेटी और अपने राज्य का आधा हिस्सा भी दूँगा।"

यह सुनते ही बहुतों ने बाघ को मारने की खूब कोशिश की, किन्तु कोई उसमें सफल न हुआ।

एक नौजवान ने नदी किनारे पानी पीने आये बाघ को देखा और किसी तरह उसे मारने में सफल भी हुआ ; मगर उस बाघ को वहीं छोड़कर वह आगे बढ़ गया। यह सब बैलगाड़ी में जा रहे एक 'ब्यारि' ने देखा। उसने सोचा मैं राजा के सामने जाकर कह दूँगा कि मैंने ही बाघ को मार डाला है। इसलिए अब राजा को चाहिए कि वह मुझसे अपनी बेटी की शादी करा दे, और राज्य का आधा हिस्सा भी दे दे। यह सब सोचकर उसने बाघ के नाखून, दाँत आदि निकाल लिए और राजा के पास भागा।

राजा को उसपर संदेह हुआ। उसने पूछा 'कैसे तुमने इस बाघ को मार डाला?" प्रश्न के उत्तर में 'ब्यारि' ने कहा 'मैंने अपना चाबुक निकाला और उससे उसे रप-रप मारा, थोड़ी ही देर में वह वहीं मर गया।" उसी समय जिस युवक ने सचमुच बाघ को मार डाला था वह मरे हुए बाघ को अपने काँधेपर डालकर ले आया और आते ही उसने उए राजा के पैरों के पास फेंक दिया। अब तक 'ब्यारि' समझ गया था कि राजा को उसपर संदेह हो रहा था। इसलिए वह वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गया। बाघ के दाँत और नाखून मिलने पर उसने सोचा था कि अब मुझे इन बैलों और गाड़ी की क्या ज़रूरत ? यह सिर्फ़ उसने सोचा ही न था बल्कि उन दोनों को उसने खाई में फेंक दिया था। अब उसके पास उन्हें वहाँ से ऊपर खींचने के अलावा दूसरा उपाय न था। बैलों को ऊपर खींचते-खींचते वह बड़बड़ा रहा था "मुझे न धन मिला न स्त्री। आंओ मेरे बैलों ऊपर आओ।" वह अपने आपको ही कोस रहा था।

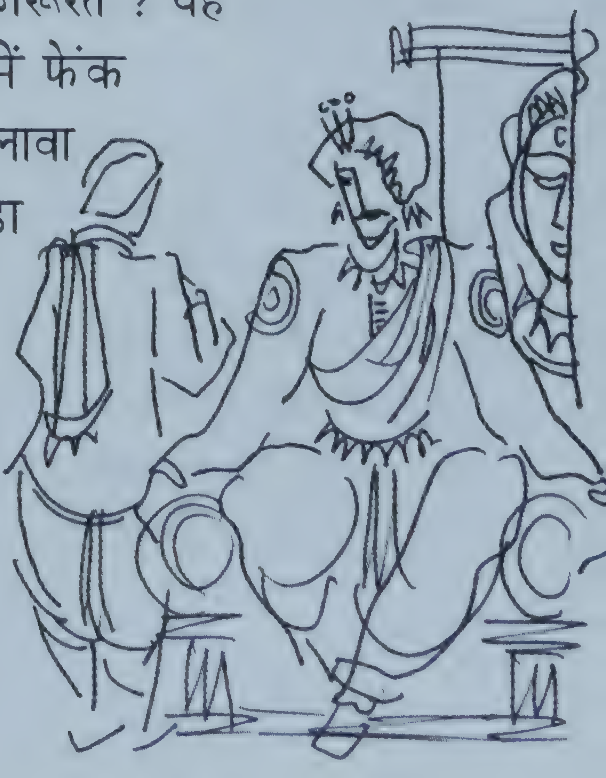

वि. सू.- मुसलमान व्यापारी को 'तुलुनाड्डु' में 'ब्यारि' कहते हैं

मारिमंदिर के पास एक गोलाकार चबूतरा

भारत में अभी ब्रिटिश राज ही चल रहा था उस समय की बात है । आम तौर पर एक गाँव में एक ही मारिमंदिर होता है । पर, सुरतकल में एक नहीं तीन मारिमंदिर थे । जब तीसरे मारीमंदिर बाँधने का काम पूरा हुआ तब पूजा के लिए प्रतिष्ठापना दिन भी तय हुआ । उसी तरह इससे पूर्व के यानी दूसरे मारिमंदिर में भी उसी दिन महापूजा का दिन निश्चित किया गया था । एक के सामने दूसरी दुकान खोलने जैसा हुआ । सभी जानते हैं कि ऐसा होनेपर दोनों के बीच वाद-विवाद की पर्याप्त गुँजाइश होती है । इस बार भी ऐसा ही हुआ । दोनों मंदिरों के व्यवस्थापकों, महापूजा के आयोजकों के बीच ऐसा झगड़ा बढ़ा कि उसमें सरकार का प्रवेश आवश्यक हो गया ।

सरकार की ओर से आदेश हुआ "नयी पूजा उचित समयपर ही संपन्न हो |" इस आदेश के पीछे-पीछे पुलिस भी आ गयी । कहते हैं कि सर्कल इन्स्पेक्टर का झुकाव दूसरी ओर अधिक था । इसलिए उन्होंने घड़ी का काँटा अपने हिसाब से थोड़ा आगे-पीछे कर दिया। और साथ ही नियत समय से पूर्व ही पूजा समाप्त करने का आग्रह किया। 'दर्सन पात्रधारी पूजारी' को डरा-धमकाकर वहीं रोक दिया ।

यह मारियम्मा के नये मंदिर के पूजारी और भक्तों के गुस्से का कारण बना । उन्होंने देवी से ही इसकी शिकायत की । इस भूल-सुधार के लिए मन्नतें भी माँगी जाने लगीं । उसी समय सर्कल इन्स्पेक्टर के बहनोईने कुँए में कूदकर आत्महत्या कर ली । घबराकर वे रात को ही चौधरी जी के यहाँ दौड़े-दौड़े चले आये । चौधरी ने इसे 'देवी की लीला' कहा । उसी तरह गलती करनेवालों ने भी मारिमंदिर आकर देवी के सामने नतमस्तक होकर अपनी गलती स्वीकार कर उसके लिए क्षमायाचना की ।

इतना ही नहीं क्षमायाचना करनेवालों ने अपने ही खर्च से महापूजा भी करवायी । अगले वर्ष उत्सव के समय देवी की मूर्ति स्थापित करने के लिए एक शिलासन भी बनवाया। यह शिलासन सर्कल इन्स्पेक्टर ने बनवाया इसलिए उसे 'सर्कल कट्टे' कहा जाने लगा ।

वि. सू. – 1) सुरतकल मंगलूर से कोई 15-20 कि.मी. पर बसा हुआ एक छोटासा नगर. **2)** तुलु में "अंगडिगे एदुरंगडि" एक उक्ति है जिसका अर्थ यह होता है; एक के सामने दूसरी दुकान अर्थात दोनों दूकानदार सीधे-सीधे एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी हो जाते हैं । 3) तुलु शब्द 'दर्शन पात्रधारी पूजारी' और हिन्दी शब्द 'पुजारी' में अन्तर है । 'दर्शन पात्रधारी पूजारी' का कार्य होता है देवी को स्वयं में आमंत्रित करना । माना जाता है कि जब उसमें देवी प्रवेश करती है तब वह आवेश में आ जाता है । लोग अपनी-अपनी समस्या उससे कहते हैं और उसके मुँह से देवी उत्तर देती है । 4) कट्टे = चबूतरा, चौथरा

छिलकाभर चिड़वा कौन खाएगा?

एक शादी-ब्याह के घर में बड़े-बुजुर्गों का एक समूह अलग से जमा होकर आपस में गप्पे लड़ा रहा था। उनके पास ही एक थाली में पान, पानी में भिगोई सुपारी, चूने की डिबिया, तम्बाखू के पान, आदि रखा हुआ था। घर के एक सदस्य पानी में भिगोई सुपारी निकालकर उसके छिलके निकालकर उसे काटकर टुकड़े उस थाली में रख रहे थे। उस समय उस समूह में से एक ने उन छिलकों में से एक उठाया और सबको दिखाते हुए बोला "यह छिलकाभर चिड़वा कौन खाएगा?" उनके इस प्रश्न को सुनकर सब सोचने लगे कि यह क्या मज़ाक कर रहे हैं!

किसीने मज़ाक के ही स्वर में ज़रा ज़ोर से पूछा "अरे! एक हथेली बराबर भी यह छिलका नहीं है उसमें चिड़वा ही कितना भरेगा?" यह सुनते ही पहले सवाल करनेवाले ने आँगन के बीच बैठकर उस छिलके को कूट-कूटकर काफ़ी बड़ा जाला बना दिया और उसे आंगन में पसार दिया। छिलके के उस जाले ने काफ़ी बड़ी जगह ले ली। इसे देखकर सब दंग रह गए। एक घड़ा-भर चिड़वे (14 सेर) से भी ज़्यादा चिड़वे जहाँ भरे जा सकते थे उतनी जगह उस जाले ने ली थी।

इस तरह मज़ाक-मज़ाक में ही हमारे बड़े-बुजुर्ग अपनी होशियारी दिखाकर एक दूसरे को हराते भी थे यह बात यहाँ पता चलती है।

भूत पकड़ लो ! दण्ड वसूल कर लो

एक बार जब गाँव में 'नेम' पूजा का समय था तब गाँव के मुखिया लोग एक चबूतरे पर बैठे थे । गाँव के कुछ लोग वहाँ आसपास जमा हुए थे । एक ने अफ़वाह उड़ायी कि एक बूढ़े बाबा ने भूत के नाचने के स्थान पर बदबू छोड़ी है । सब ने सोचा "अरे! ऐसे पुण्य स्थल पर बदबू छोड़ना क्या कोई सामान्य बात है कि जिसे अनसुना कर दिया जाए !" तय हुआ कि उस बूढ़े से इसके लिए क्षमायाचना ज़रूर करवानी चाहिए ।" उसके लिए जुर्माना भी तय किया गया । जुर्माने के अनुसार दूसरे दिन वह बूढ़ा एक लाठी के एक छोर पर पोटली में पैसा बाँधकर ले आया । जब भूत के नेम की पूजा हो रही थी तब दूर से ही उसने वह लाठी सीधी पक़ड ली जिससे पोटली की ऊँचाई बढ़ गयी और फिर विनयपूर्वक कहने लगा कि "हे अम्टाड़ी के पंजुर्लि मैं मानता हूँ कि तू है और वैसे ही बंटवाल का मैं भी एक कोंकणी हूँ (= मैं भी कोई ऐसा–वैसा नहीं हूँ) मैंने बदबू छोड़ने के अपराध के दण्डस्वरूप पैसा लाठी के सिरे पर बाँध रखा है । हे भूत उसे तुम ले लो " भूत ने गर्दन उठाकर उस पोटली को बड़ी आस से देखा पर भूत के हाथ वहाँ तक पहुँच नहीं पा रहे थे । हाथ सामने कर बूढ़ा दे भी नहीं पा रहा था । अब वहाँ जमा हुए लोग सोच में पड़ गये कि क्या किया जाए ! कोई उपाय नहीं सूझ रहा था । आखिरकार भूत ने अपने 'अणि' को झकझोरा, पैरों के घुँघरु बज उठे । उसने ज़ोर से गरजते हुए आदेश दिया, "अब आगे से इस चबूतरेपर कोई बदबू न छोड़े ।"

नेम = (द. क. ज़िले में भूताराधना होती है ऐसी ही) एक तरह की वार्षिक पूजा जिसमें एक व्यक्ति भूत की वेशभूषा में आता है । रातभर यह उत्सव मनाया जाता है । पंजुर्लि = वह भूत जिसका 'नेम' हो रहा था । अणि = पीठपर बाँधी हुई तेजोवलय जैसी आकृति

इस कहानी में 'चबूतरे पर बैठे हुए लोग= वहाँ के गण्यमान्य व्यक्ति

मज़ाक बन गया मुश्किल

एक बार एक आदमी दुकान आया और वहाँ टँग रहे केलों में से उसने एक केला तोड़ा और खा लिया। उसने दुकानदार से पूछा न था। वह हमेशा ही वहाँ आता था। दुकानदार से अच्छी पहचान होने के कारण उसने पूछना ज़रूरी न समझा और केला तोड़ा था। लेकिन जब वह दुकानदार को पैसे देने लगा तो दुकानदार ने नाराज़ होकर उससे पूछा, "किससे पूछकर तुमने केला तोड़ा और फिर खा ड़ाला ? समझ क्या रखा है तुमने ? देखो ! बगैर पूछे तोड़कर खा लिया इसलिए तुम्हें सौ रुपये का जुर्माना मुझे देना होगा।" तब उस आदमी ने कहा, "ठीक है दे दूँगा।" तब तक हुआ क्या था कि दुकानदार ने जो अपनी गाय वहाँ पास ही एक खंभे से बाँध रखी थी उसने इसके फेंके केले के छिलके खा डाले थे। यह उस आदमी ने देखा था। इससे मानो उसे एक अस्त्र ही मिल गया। उसने कहा, देखो भाई अब तो तुम्हें ही मुझे सौ रुपये देने होंगे, समझे ?

जानते हो तुम्हारी गाय ने क्या किया है? मेरे केले के छिलके उसने खा डाले हैं। अब तो तुम्हें ही मुझे दण्ड की रकम देनी होगी। और इस तरह दोनों का दण्ड एक समान हो गया और न्याय हो गया।

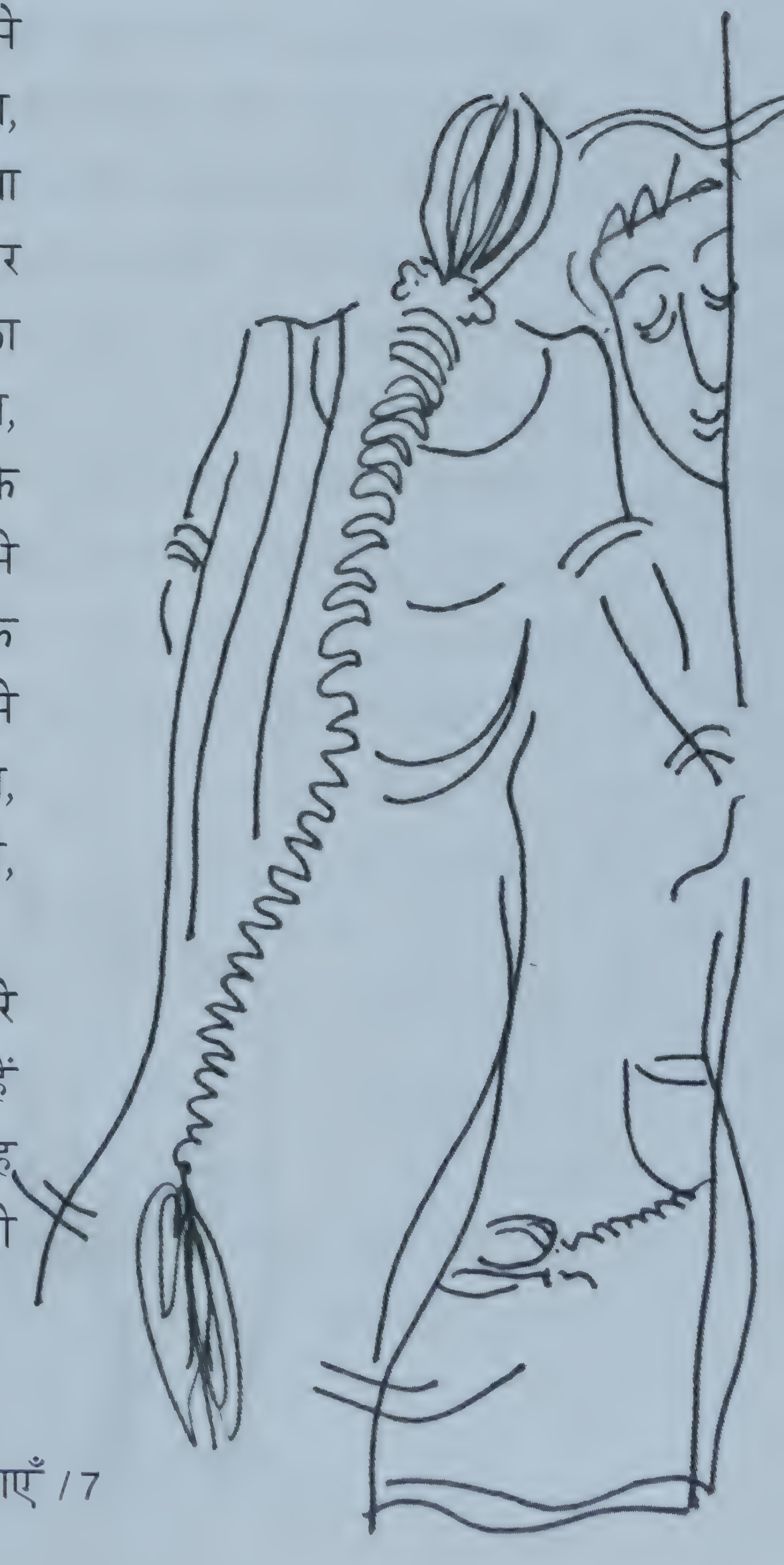

आपके मवेशियों में एक भैंसे ने पड़वा दिया है और उसे सूँघ रहा है

युगल वीर के नाम से विख्यात कोटि चेन्नय्या पंजद पदवु में घूम रहे थे । वहाँ कई सारे ग्वाले थे । छोटे भाई चेन्नय्या ने बड़े भाई कोटि से कहा चलो जाकर उनसे एक पहेली बूझते हैं । दोनों इसके लिए राज़ी थे । उन्होंने ग्वालों के पास जाकर एक पहेली बूझी "देखो ग्वालों तुम्हारे मवेशियों में से एक भंसे ने पड़वा दिया है और उसे सूँघ रहा है ।"

इस पहेली के जवाब के बदले ग्वालों ने एक और पहेली उनके सामने रख दी । उन्होंने कहा "देखो बंटों पश्चिम दिशा में समुद्र में आग लगी है ।" दोनों पक्ष एक दूसरे की पहेली को समझ नहीं पा रहे थे । आखिर उन्होंने कहा हम अपने–अपने सवालों के जवाब दे देते हैं । यही ठीक रहेगा । दोनों ने जवाब में कहा "भंसे ने एक पड़वा दिया और उसे सूँघ रहा है । यानी भैंसे ने गोबर डाला और उसे सूँघ रहा है ।" तब ग्वालों ने अपने प्रश्न का उत्तर यों दिया, "पश्चिम दिशा में समुद्र में आग लगी है । यानी सूर्यास्त के समय पश्चिम दिशा में आकाश में फैले आग की तरह के रंग का प्रतिबिंब समुद्र में पड़ा है।" ऐसी कुतूहलपूर्ण और रोचक थीं वे बातें ।

बंट = द. क. ज़िले के लोगों का एक वर्ग

क्या मैं यह पूरा खा डालूँ?

गाँवों में शाम के समय किसी दुकान के दरवाज़े के पास बैठकर गपशप में समय काटना गाँववालों का शौक होता है । ऐसे ही एक बार कुछ लोग एक दुकान के पास बैठे थे । दुकान के सामने बेचने के लिए केले टाँग रखे थे । उधर बैठे हुओं में से एक उन केलों को देख रहा था । शायद उसे केले भा गये थे । सहज ही उसके मुँह से उदगार निकले "क्या मैं ये पूरा खा डालूँ !" यह सुनते ही दूसरे ने कहा यदि तुम सचमुच पूरा का पूरा खा लो तो उसपर मैं तुम्हें एक सौ रुपये दूँगा । खाकर दिखाओ तो जानूँ।" अब तो बाज़ी लग गयी । जब बाज़ी लग गयी तो उसके नतीजे के बारे में दोनों तरह से सोचना ज़रूरी था । इसलिए यह तय हुआ कि हारनेवाले को सौ रुपये देने पड़ेंगे । दोनों के बीच बाज़ी लग गयी । दुकानदार भी बाकी जमा दर्शकों में शामिल होकर उत्सुकता से बाज़ी देख रह था । उसने केले खाना शुरू किया । बहुत सारे केले खा चुकने के बाद वह चुपचाप बैठा रहा । इसे देखते हुए दूसरे ने पूछा, "क्या हुआ ? तुमने तो सभी केले खाए नहीं । हार गए क्या ?" यह सुनते ही केले खानेवाले ने कहा, "नहीं नहीं हारा नहीं हूँ । जितने अब खाने थे उतने तो मैंने खा लिए । लेकिन बाज़ी लगाते समय यह कहाँ तय हुआ था कि कब तक इसे पूरा खा लेना चाहिए ?" "ओहो! यह बात है! ठीक है ।" दूसरे के पास इसे मानने के सिवाय और कोई चारा भी तो न था । इस तरह दो दिनों में टँगे हुए सारे केले खत्म हो गए । इतना होने पर भी जिसने खाए वह जीत न पाया , क्यों कि उसने केले के छिलके, केले के पेड़ का वह भाग जिससे केले लगे टँगे हुए थे, वह रस्सी जिससे केले बाँधे गये थे वह कुछ भी तो न खाया था । जब बाज़ी लगी थी तब पूरा का पूरा खाने की बात कही–मानी गयी थी । इसलिए ज़रूरी था कि वह सब कुछ खा जाए । यही था हराने का उपाय । इस तरह बाज़ी में कौन जीता आप ही सोचिए ।

सासू जी की बात सुनती हूँ तो मेरे पेट में आग लग जाती है

एक बार एक घर में कटहल के 'कडुबु' बनाकर पकाने के लिए रखे थे। आसपास सासूजी को न देखकर बहू ने पक रहे 'कडुबु' में से ही एक निकाले और खाने के लिए बाहर ले आयी। उसी समय बाहर से सासू जी का किसीसे बात करने का स्वर सुनायी दिया। अब क्या करें ? कुछ न सूझकर उसने वह गरम-गरम 'कडुबु' ही अपने आँचल में छुपा लिया। सासूजी अन्दर आयी तो बहू को देखते ही उस पर भुनभुनाने लगी। बहू ने अपनी सासूजी से कहा "जब आपकी बात सुनती हूँ तो मेरे पेट में आग-सी लग जाती है। बस उसी दिन से एक कहावत बन गयी "सासू जी की बात सुनती हूँ तो मेरे पेट में आग लग जाती है।" और देखते ही देखते वह कहावत लोगों को भा गयी। बहू पर जो बिपदा आन पड़ी थी उसे 'न निगला जा सकता था और न उगला' गरम-गरम 'कडुबु' की गरमाहट बेचारी बहू के शरीर में ही फैल गयी थी। हाँ एक बात तो थी कि उसका 'राज़' किसीको मालूम न पड़ा। इस तरह प्रभावी और प्रबल लोगों के साथ जीने का यह एक उपाय है।

कडुबु=एक प्रकार का मिष्टान्न

सासू जी को फिरसे परोसने आयी बहू

वह एक ज़माना था जब अविभक्त परिवार हुआ करते थे। सास–बहू दोनों एक दूसरी को देखना भी नापसन्द करती थीं। 'तेल और शिकेकायी का जितना प्यार' दोनों में हुआ करता था। दोनों एक दूसरी को आँखें दिखाती थीं। पर अन्दर ही अन्दर राज़ की बात यह थी कि सास–बहू दोनों एक दूसरी से डरा करती थीं। मज़ा तो तब आता जब चोरी–चोरी कुछ खाते समय कभी–कभी पकड़ी जाती थीं। घरघर में आवश्यकतानुसार ही अनाज ले आने का वह ज़माना था।

ऐसे ही एक परिवार की यह बात है। एक बार बहू ने खाना तो पकाया था पर उसके बाद वह कहीं दिखायी नहीं दी। सास ने सोचा शायद कहीं बाहर गयी होगी। बहू को वहाँ न पाकर सास ने सोचा चलो यह अच्छा मौका है। उसने बहू के बनाये खाने में से थोड़ा सा एक थाली में परोस लिया और कोनेवाले एक कमरे में ले आयी। तभी बहू जो बाहर कहीं गयी हुई थी, घर वापस आयी। उसे आसपास कहीं सास दिखायी न दी। उसने भी सोचा चलो यह अच्छा मौका है। उसने भी बनाये खाने में से थोड़ा सा एक थाली में परोस लिया और वह भी उसी कमरे में चली आयी। इस तरह वहाँ अचानक आ धमकी बहू को देखकर सास को क्या करें, सूझ नहीं रहा था पर कुछ बोलना तो था ही। इसलिए उसने बहू से सवाल किया, "क्यों क्या चाहिए ?" बहू भी वहाँ सासूजी को देख पहले तो हक्का–बक्का रह गयी पर बाद में 'असली बात' कुछ–कुछ समझ भी गयी थी। इसलिए उसने थोड़े धैर्य से ही कहा, "कुछ नहीं मैं आपको फिर से कुछ चाहिए होगा न इसलिए परोसने के लिए आयी हूँ। ऊपरी–ऊपर तो बहू बड़ी अच्छी बन गयी थी पर सबको पता था कि दोनों ही चोर हैं। पर उन दोनों में से कोई भी इस बारे में किसी से कुछ कह नहीं पा रही थीं।

वि. सू. – "तेल शिकेकायी का संबंध" एक कहावत है, जिसका अर्थ है एक दूसरे से न बनना। (शिकेकायि से तेल धो डाला जाता है।)

मैं इस घर की प्रमुख स्त्री हूँ समझे

घर कोई भी हो पर वहाँ राज तो चलता है सास का ही। बगैर सास से पूछे बहू न कुछ भी कर पाती है और न ही वह एक कदम भी आगे रख पाती है। जब सास घर पर नहीं होती थी तब तो बहू के लिए ज़रूरी था कि सारे काम वह पूरी सावधानी के साथ करे। क्यों कि ऐसा न होनेपर सास के लौट आने पर ज़रूर वह उस बारे में पूछती।

एक बार ऐसे ही एक घर में सास घर पर नहीं थी, सिर्फ़ बहू ही थी। एक भित्तुक दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ था। बगैर सास से पूछे बहू किसी को कुछ भी दे कैसे दे पाती ? इसलिए घर में कुछ नहीं है कहकर उसने भित्तुक को लौटा दिया। उसी समय उसी ओर से सास आ रही थी। उसने सामने से भित्तुक को आते हुए देखा। और उसने पूछ ही डाला कि उस घर से तुम्हें क्या मिला? भित्तुक ने जवाब में कहा कि घर में जो स्त्री थी उसने कहा कि "तुम्हें देने के लिए घर में कुछ भी नहीं है।" यह सुनते ही सास ने कहा "अच्छा ऐसा कहा? मैं जाकर अभी पूछती हूँ।" कहकर उसने भित्तुक को वापस घर तक चलने को कहा। भित्तुक को लगा चलो यह अच्छा हुआ अब ज़रूर कुछ–न–कुछ तो मिल ही जाएगा। यह सोचकर भित्तुक उसके पीछे–पीछे चल दिया। घर तक आ जाने पर उसे बाहर ही रोककर वह अंदर जा ही रही थी कि उसे सामने ही बहू खड़ी दिखायी दी। सास ने ज़रा ज़ोर से ही पूछा, क्यों री यही है तेरा काम? मैं इस घर की सबसे प्रमुख स्त्री हूँ क्या यह तू नहीं जानती?" इतना कहकर उस भित्तुक की ओर मुड़कर ज़ोर से बोली "देखो मैं हूँ इसकी सास यानी इस घर की प्रमुख स्त्री। इस घर में तुम्हें देने के लिए कुछ भी नहीं है। चले जाओ यहाँ से।" बेचारा भित्तुक ! इतनी देर से खड़ा सोच रहा था बहू की खूब खबर लेकर यह सास ज़रूर मुझे कुछ दे देगी। पर ऐसा तो कुछ हुआ नहीं और वह हाथ से सिर ठोंकता हुआ चला गया।

ऊख चुरानेवाले जारु को देखो

वहाँ 'बोट्टु' में 'बयलाटा' शुरु हो चुका है । गाँव के सारे लोग वहाँ इकट्ठा हो गये हैं । पुरुष, स्त्रियाँ, बूढे, युवक, बच्चे सब 'बयलाटा' देख रहे हैं । मध्य रात्रि का समय शायद बीत चुका था । हमारा जारु भी वहाँ आ गया है । रंगबिरंगी पोषाकों में स्वांग–हास–परिहास आदि, मज़ा ही मज़ा था । स्वांग में आनेवाले हर कोई 'भागवतरु' के द्वारा गाए गए पद्यों का अर्थ कहकर मंच से चले जा रहे हैं । भागवतरु के गानों में हर कोई रंग गया है । लेकिन भागवतरु के एक गाने से मानो उसके पैरोंतले ज़मीन खिसक गयी । मंच पर स्त्री पात्रधारी गाते हुए नाच रहा था और सब आँखें और मुँह खोले उसे देखने में मग्न हो गये हैं । अब तक राग के अलाप को कान लगाए सुन रहा था जारु, किंतु जैसे ही उसने "कंबु कंठिनि चारुशीले" यह पंक्ति सुनी मानो उसे बिजली का झटका सा लग गया । "कंबु कंठिनि चारुशिले" के बदले उसके कानों ने शायद सुना "कंर्बु कंडिनि जारु तूले" अर्थात ऊख चुरानेवाले जारु को देखिए ।

जारु सहम सा गया और सोचने लगा "अरे यह क्या! मैंने ऊख चुराये पर यह बात इस भागवतरु को कैसे मालूम हो गयी? अगर नहीं, तो ये ऐसे कैसे कह रहे हैं? मुझे ही घूर रहे हैं और गाए जा रहे हैं । हाँ, यह सच है कि मजलु बेट्टु के भट्टजी के खेत से मैंने ही एक भार ऊख काटे और फिर छुपाकर रख दिये हैं, पर यह बात आखिर इस भगवतरु को कैसे पता चल गयी ? इस पर वे क्या चुप बैठेंगे ? इनपर कैसे भरोसा किया जा सकता है? मेरी ओर इशारा करते हुए उन्होंने यदि कह दिया कि देखिए यह जारु यहीं पर है , तब मेरी कहानी तो यहीं खत्म हो जाएगी । अब क्या करूँ? ये भागवतरु तो मुझे ही देखे जा रहे हैं । इस समय यहाँ से चंपत हो जाना ही ठीक होगा । ऐसा सोचते हुए इधर–उधर देखते हुए जारु धीरे–धीरे वहाँ से खिसकने लगा । उधर भागवतरु अभी भी गा रहे थे "कंबु कंठिनि चारुशीले" और अभी भी जारु के कान सुन रहे थे "कंर्बु कंडिनि जारु तूले" । लोग रंगमंच पर खेला जा रहा नाटक देखने में ऐसे मग्न थे कि अपने आप को भी भूल से गये थे किंतु जारु ! वह तो वहाँ से जाने कब और कैसे नौ दो ग्यारह हो गया था किसी को पता न चला ।

अर्थ – बोट्टु =जहाँ बरसाती पानी के ही आधार से खेती की जाती है । बयलाटा = खुले मैदान में खेले जानेवाला यक्षगान (एक तरह का नृत्य नाटक) । भागवतरु= खेल दिखानेवाली मंडली के पीछे कुछ वादक अपने वाद्यों के साथ बैठे होते हैं । उनमें से एक, प्रदर्शित होनेवाले प्रसंग से संबद्ध गीत उच्च स्वर में गाते हैं । उन्हें भागवतरु कहते हैं ।

गुस्सा भट्‌ट जी पर और नहाने के लिए पानी नहीं

इस तरफ़ का घर भट्‌टजी का और उस तरफ़ का चौधरी का। एक बार दोनों में किसी बात को लेकर छिड़ गयी। इस भट्‌ट को खूब सबक सिखाना ही होगा सोचकर वह मौके की ताक में बैठा रहा। त्योहार, मेला आदि के समय भगवान को सिर पर धारण कर मंदिर के अहाते में फेरे डालने का बड़ा उत्तरदायित्व भट्‌टजी के कंधों पर था।

गाँव के मेले का समय आ गया। उत्सव के उपरांत नहाने के लिए भगवानजी चले तालाब की ओर। उन्हें सिर पर उठाए हुए वहाँ तक ले जाने का काम था भट्‌टजी का। मौके की तलाश में रहे चौधरी ने इसका फायदा उठाना चाहा। उसने मन ही मन सोचा, "अब देखता हूँ भगवानजी को कैसे पानी में उतारता है यह भट्‌ट" यह सोचकर एक दिन पहले ही उसने तालाब का सारा पानी खिंचवाकर पूरा तालाब खाली कराया। भगवानजी को स्नान के लिए उतरना था, पर उनके नहाने के लिए पानी कहाँ था ? भट्‌टजी पर के गुस्से को भगवानजी पर उतारा था चौधरी ने! गुस्सा था किसपर और उतारा किसपर ? नहाने के लिए भगवानजी को गाँव के तालाब का पानी न मिला। वे रूठ गये। परिणाम यह हुआ कि रूठे हुए भगवानजी ने चौधरी के बच्चों को शाप दे डाला।

पिताजी कहीं नहीं, मुर्गी के बाड़े में भी नहीं

एक बार पुलिसवाले एक चोर का पीछा कर रहे थे । चोर भाग गया था ।फिर भी पुलिसवालोंने पीछा करना नहीं छोड़ा । किसी तरह से उनसे ख़ुद को बचाते हुए चोर अपने घर पहुँच ही गया । पुलिसवालोंने उसके घर का पता लगाया और वे वहाँ आ धमके।

पुलिस को आते देखकर भी चोर कुछ न कर पा रहा था । वह सोच में पड़ गया कि क्या करूँ ? आखिर पुलिस के हाथों पकड़ा ही जाऊँगा । उसे एक तरकीब सूझी । उसने फ़ौरन अपने बेटे को बुलाया और कहा "देख बेटे ! यदि कोई मुझे पूछते हुए यहाँ आ जायें तो कहना पिताजी घरपर नहीं हैं ।" बेटे को इस तरह समझाकर वह तुरन्त मुर्गे के बाड़े की ओर भागा और किसी तरह उसके अंदर घुसकर छुपकर बैठ गया ।

इस ओर चोर छुप गया और उसी समय तुरन्त वहाँ पुलिसवाले आ पहुँचे ।

चोर का बेटा अभी भी आँगन में ही खड़ा था । उससे उन्होंने पूछा । पुलिसवाले जान गये कि वह उस चोर का ही बेटा था । उन्होंने उससे पूछा, "जल्दी बता तुम्हारे पिताजी कहाँ है?" उनकी गुर्राहट से बेचारा लड़का डर गया । बेचारे की ज़बान सूखने लगी । वह शब्द भी भूलने लगा । क्या कहें मालूम न हो रहा था । हकलाते हुए बोला, " पपपिता पिताजी, क ककहीं नहीं हैं, घरघर में भी नहीं, बाड़े में भी नहीं हैं । " बाप के छुपने के राज़ को उसकी ज़बान ने आखिर उगाल ही दिया । इससे चोर को ढूँढनेवालों को उसने ख़ुद ही रास्ता बता दिया । इस तरह अब यह बताना ज़रूरी नहीं कि आखिरकार चोर पकड़ा ही गया ।

'नेंट" को बाँधकर रखो ! 'दोण्णे' को ढूँढो!

चरने के लिए छोड़े गए बैल, भैंसे, पेट भरने के बाद भी पहाड़ी से नीचे आना पसंद नहीं करते। रात का अँधेरा भी धीरे–धीरे छाने लगता है तब भी अपने तबेले में नहीं लौटते। ऐसा खासकर तब होता है जब उन्हें पता होता है कि दूसरे दिन सुबह ही खेतों में हल चलाना है। यह मालूम होनेपर सबसे आँख चुरानेवाले बैल, भैंसे भी होते हैं। जोड़ी में से एक एक ओर जाता है तो दूसरा कहीं और। इसलिए हल चलानेवाला शाम को ही उन्हें ढूँढकर तबेले में लाकर बाँध देता है। यदि वह ऐसा न करे तो दूसरे दिन बैलों से काम कैसे कराए ?

एक किसान के पास बैलों की एक जोड़ी थी। उनमें से एक का नाम था 'नेंट' और दूसरे का 'दोण्णे'। एक दिन उस किसान के यहाँ कोई 'नेंट' (परिचित) आये और आकर बाहर ड्योढ़ी पर बैठ गये। उसी समय किसान अपने खेत से सारा काम निपटाकर घर आ ही रहा था कि अचानक उसने देखा कि उसका नेंट जो चरने गया था वह वापस आ रहा है। वह यह मौका हाथ से न जाने देना चाहता था। इसलिए उसे तुरन्त पकड़ने के लिए घरवालों को ज़ोर–ज़ोर से पुकार–पुकारकर कहने लगा "अरे अरे! देखो नेंट आ गया है उसे जल्दी से पकड़ो, और जल्दी से जाकर दोण्णे को खोजो।" ड्योढ़ी पर बैठे नेंटने यह सुना। बेचारा डर के मारे सोचने लगा "लो हो गयी बात! यदि मैं और कुछ देर यहाँ बैठा रहूँगा तब तो मेरा काम ही तमाम हो जायेगा। इस ख़याल के आते ही वह धीरे से नीचे उतरा और तेज़ी से भागने लगा। घरवालों में से किसीने उसे देखा और वे चकित हो गये कि यह क्यों इस तरह भाग रहा है ! उसे रोकने के लिए वे भी उसके पीछे–पीछे भागने लगे। जैसे ही उसे मालूम हुआ कि ये लोग मेरे पीछे ही भागते आ रहे हैं, वह और भी तेज़ी से दौड़ने लगा। उसने सोचा ये लोग ज़रूर मुझे मार डालने की योजना बना रहे हैं। पीछा करनेवालों में से एक के हाथ में तो उसने एक फावड़ा भी देखा। फिर क्या था उसने अपने भागने की गति और भी बढ़ा दी। आखिर किसी तरह से पीछा करनेवालों ने उसे पकड़ ही लिया। नेंट की साँस फूल रही थी। किसी तरह से सबने उसका मुँह खुलवाने की कोशिश की। और फिर धीरे–धीरे नेंट और बाकी सबकी समझ में यह बात आ गयी कि बैलों के नाम 'नेंट' और 'दोण्णे' होने के कारण ही यह सारा किस्सा हुआ। इस तरह मिलने आये नेंट का समाधान करते–करते घरवालों का बुरा हाल हुआ।

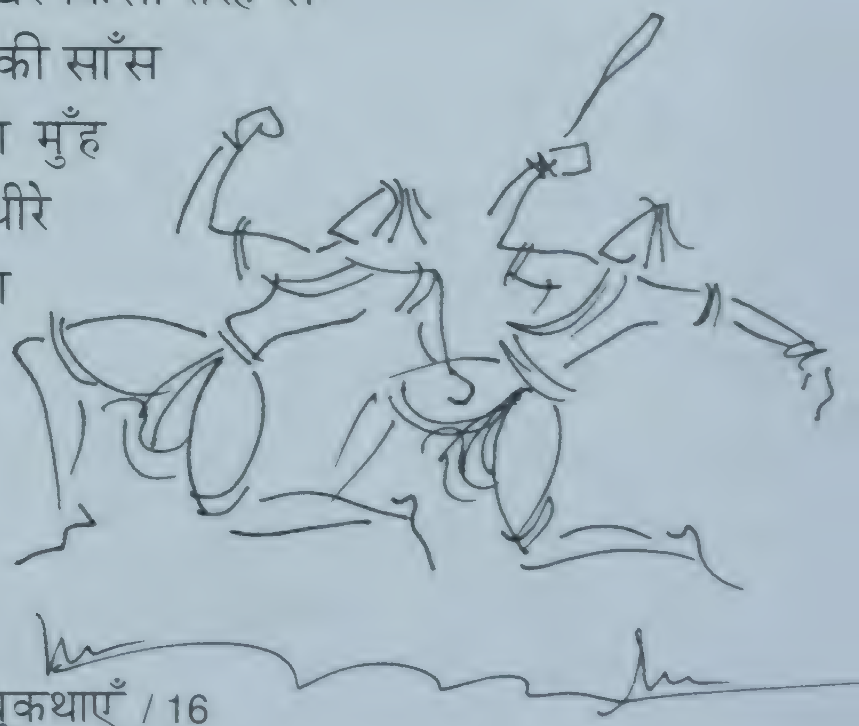

शादीवाले घर में भाँजेराजा पर दोहरा संकट

एक ज़माने में 'कोडियाल गुत्तु' में गण्य व्यक्तियों में तिम्मप्प हेग्गडे जी का भी नाम था। उनके सामने कोई भी कुछ भी गलत नहीं कर पाता था। यदि कोई ऐसा कुछ कर बैठता तो वे उसे छोड़ते भी न थे। अपने 'गुत्तु' के एक बहुत बड़े खेत में जब तब 'बयलाटा' खेलाने का पागलपन हेग्गड़ेजी पर सवार था। 'बयलाटा' जिस दिन आयोजित होता उस दिन रंगमंच खास तरीके से तैयार हो जाता था। 'बयलाटा' की पूरी मण्डली के खान-पान और रहने आदि की सारी व्यवस्था अपने अधिकार क्षेत्र की ज़मीन पर ही करवाते।

और जगहों पर होनेवाले 'बयलाटा' और हेग्गड़ेजी द्वारा आयोजित 'बयलाटा' के रंगमंच की साजसज्जा में कुछ अंतर अवश्य होता था। अन्तर यह था कि चार खंभों को चार चाबुक बाँधे जाते थे। इस तरह चाबुक क्यों बँधे होते थे इसका कारण 'बयलाटा' देखने आनेवाले सभी जानते थे। खेल के लिए वहाँ आकर कोई होहल्ला मचानेवालों के लिए इन चाबुकों का प्रयोग होता था इसे अलग से कहने की ज़रूरत नहीं।

हेग्गड़ेजी की दृष्टि खेल के पात्रधारियोंपर भी होती थी। 'बयलाटा' के पात्र यदि ताल पकड़ने में कमज़ोर होते या फिर ताल ही ठीक न बैठता तो उन्हें वहीं सबके सामने खूब खरीखोटी सुनाते। इतना ही नहीं दर्शक भी ऐसे होते थे कि कलाकारों से ऐसी कोई गलती हो जाती तो चुप न बैठते बल्कि बहुत ही कठोर व्यवहार से दिखा देते कि वे ऐसी कोई गडबड़ी बर्दाश्त नहीं कर

सकते। इसलिए ऐसे खेलप्रिय दर्शक अवश्य ही खेल देखने आते। उन्हें विश्वास होता कि खेल आयोजक हेग्गड़े जी हैं तो बिना किसी झमेले के वे आराम से खेल देख सकते हैं।

अपनी जाति से निम्नजाति का होने पर भी पाण्डु को हेग्गड़े जी अपने साथ रखते थे। अपने सीधे व्यक्तित्व, धैर्य, साहस आदि के कारण पाण्डु, हेग्गड़े जी के साथ उनके आज्ञाकारी सेवक की भाँति हमेशा हर जगह लगा रहता। उसके ऐसे स्वभाव के कारण हेग्गड़ेजी उसे मानते भी थे। इस कारण 'बयलाटा' जैसे सन्दर्भों में पाण्डु के लिए एक विशिष्ट आसन अवश्य होता था। पाण्डु की अनुपस्थिति में उसके बेटे बोम्मय्या को वह स्थान प्राप्त होता।

एक बार तिम्मप्पा हेग्गड़े के यहाँ एक शादी थी जिसमें पाण्डु जा नहीं सका था। इसलिए उसने बोम्मय्या को वहाँ भेज दिया। हेग्गड़ेजी ने दूर ही से बोम्मय्या को आते देखा और उन्होंने अपनी जातिवालों के साथ ही उसे बिठा दिया। बहुत सारे लोग उसे जानते न थे। बोम्मय्या को भी वहाँ बैठना कुछ अजीब सा लग रहा था। "यह कौन है?" वहाँ बैठे हुओं में से किसीने पूछ ही डाला। तिम्माप्पाजी ने तुरन्त जवाब दिया "यह मेरा भाँजा है।" उनके इस जवाब से बेचारा बोम्मय्या दोहरे संकट में फँस गया। कहीं किसीने मुझसे ही कुछ पूछ लिया तो?यह डर उसे सताने लगा। जाने उसका कौनसा पुण्य उसके अब काम आया। सभी भोजन के लिए उठे।

भोजन पंक्ति में भी भाँजे बोम्मय्याने सिर उठाने की हिम्मत न की। खैर "तू कौन है? किसका बेटा?" किसीने न पूछा। इसलिए जैसे ही भोजन समाप्त हुआ इस 'भाँजे' ने वहाँ से पलायन करना ही बेहतर समझा और वह जल्दी ही लौट गया।

गुत्तु = ज़मीनदार तथा मुखिया, बयलाटा = खुले मैदान में खेला जानेवाला यक्षगान (एक तरह का नृत्य नाटक)।

इसके ऊपर का भी मेरा, नीचे का भी मेरा ही !

एक उक्ति के अनुसार "बड़े भैया के लिए एक लड़की चाहिए और लड़की के लिए एकचाहिए " लड़की के लिए एक लड़का चाहिए जैसे ही सुनते हैं वैसे ही लड़का कैसा होना चाहिए? उसके पास क्या-क्या होना चाहिए इसपर लड़की के माता-पिता सोचने लग जाते हैं ।

एक बार एक लड़की को देखने वरपत्त के लोग आए थे । लड़की उन्हें भा गयी । केवल लड़के को देखकर थोड़े ही रिश्ता पक्का किया जा सकता है ? वधू के माता-पिता लड़के के घर गए । घर आए मेहमानों का स्वागत किया गया, हाथ-पैर धोने के लिए पानी तैयार था, बैठने के लिए चटाई बिछाई गयी थी । परंपरा के अनुसार 'गुड़-पानी' के साथ आवभगत भी हुई ।

किन्तु क्या लड़के का सिर्फ़ घर देखना ही काफ़ी होता है? लड़के के नामपर क्या जायदाद है ? क्या घराना बड़ा है ? खेती-बाड़ी, बाग आदि संबंधी क्या पूछना नहीं चाहिए ? लड़की के पिता, मामा आदि लड़के को घर से बाहर बुला लाए और उससे इस संबंधी

पूछने लगे। लड़का उन्हें घर के पिछवाड़े ले गया , तथा एक टीले पर खड़ा होकर कमरपर हाथ रखते हुए बोला " देखिए आप मुझे देख ही रहे हैं न? यहाँ से इससे ऊपर का भी मेरा और नीचे का भी मेरा ही है। वधूपक्ष के लोगों ने वह जहाँ खड़ा था वहाँ से ऊपर-नीचे और इर्द-गिर्द देखा। दूर-दूरतक केवल खाली बाग दिखायी देता था। ऊपर भी वैसाही पहाड़ी-जंगल , पीछे की ओर बड़े-बड़े पेड़ दिखायी दे रहे थे। सोचा, कोई बात नहीं, घराना तो बड़ा ही लगता है।

तय हो गया कि लड़का अपनी लड़की के योग्य ही है। फिर क्या था? शादी भी धूम-धाम से हुई उसके बाद की दावत भी खूब रही। वधू को आशीर्वाद देकर पति के घर विदा कर दिया गया। नववधू ने देहलीज़ लाँघकर गृहप्रवेश किया। सासूमाँ और ननद ने कहा जिस घर में यह नई बहू आयी है यह घर उसीका है। वह दिन ऐसे ही बीत गया। आये हुए सारे मेहमान लौट गए। ब्याहकर आयी उस स्त्री को घर का सारा हाल मालूम हुआ। किसी पक्षी के घरौंदे के जैसे एक हथेली भर जगह छोड़ पति के हिस्से में उसे कुछ दिखायी न दिया। नववधू को पति के यहाँ भेजने के बाद पगफेरे की रस्म के लिए बेटी को फिर मायके लाया गया। फिर दो दिन बीत गए। ससुराल से जिस बेटी को बुला ले गए थे उसे वापस ससुराल ले गए। दामाद की हैसीयत की सच्चाई अब तक लड़की के पिता की समझ में आ गई थी। इस बार बेटी को उसकी ससुराल पहुँचाने के लिए उसके पिता ही गए। जाते ही उन्होंने तीखे शब्दों में ही बात शुरू की। "यदि तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे घर का पानी पीऊँ तो पहले मेरे सवालों का जवाब देना होगा। तुमने क्या कहा था और क्या किया तुमने ? कहाँ है तुम्हारा वह ऊपर का भी तुम्हारा और नीचे का भी तुम्हारा हिस्सा ? कहाँ है जो तुमने दिखाया था ? किस सुख के लिए हमने अपनी बेटी का ब्याह तुमसे किया ?" "देखिए ससुरजी ! क्या गलत कहा था मैंने ? अपनी कमर के ऊपर और नीचे का हिस्सा मेरा ही है। क्या मैंने यह आपसे पहले नहीं कहा था ? जमाईराजा कमर पर हाथ रखे कह रहा था।

अब आप ही बताइए ससुरजी यहाँ से ऊपर का और नीचे का हिस्सा किसका है ? मेरा ही न? अब वह आपकी बेटी का ही तो है। है कि नहीं?

अब दामाद के साथ झगड़ने से बेटी को तो शायद पति भी मिलने से रहा, सोचकर लड़की के पिता के पास साँस रोककर बैठने के अलावा और कोई उपाय न था।

धान के छिलकों से डोर बना दो

एक बार कुछ लोग मिलकर लड़की देखने एक गाँव गए। उनमें एक बूढ़ा भी था। लेकिन उस समूह के लोगों को उस बूढ़े का साथ अच्छा न लग रहा था। इसलिए उन्होंने कुछ सोचा। उन्होंने कहा, "दादाजी दादाजी हम जल्दी जाकर आते हैं। आपके लिए इतनी दूर चलना मुश्किल होगा। आप इसी पेड़ के नीचे बैठिए।" जब सभी ऐसा ही कहने लगे तो निरुपाय होकर बूढ़े बाबा को उनकी बात माननी पड़ी।

बूढ़े बाबा को पेड़ के नीचे बिठाकर बाकी सब लोग वहाँ पहुँचे जहाँ उन्हें जाना था। वहाँ उन सबका अच्छा स्वागत हुआ। हाथ–पैर धोने के लिए उन्हें पानी दिया गया। बैठने के लिए चटाई बिछाई गई। रीतिनुसार गुड़ और पानी भी दिया ताकि सूखे गले को ज़रा आराम मिले। फिर पान–सुपारी भी दी गई। जो आये थे सबके बारे में घरवालों ने नाम आदि पूछा। जब ऐसे ही बैठे–बैठे सब बातें कर रहे थे तब ही उस गांव का अनुभवी मुखिया वहाँ आया और उसने कहा अब देखिए आपके गाँव में भी कुछ रीतियाँ होंगी, कुछ पद्धतियाँ होंगी, है न ! और उनका पालन तो हमें करना ही होता है, है कि नाही? अब हमारे गाँव की लड़की से शादी करना चाहते हो तो हमारे गाँव के रिवाज़ को भी तो मानना पड़ेगा। हमारे गाँव के रिवाज़ के अनुसार आप सबको धान के छिलके से एक डोर बनानी होगी। यदि आपको हमारी लड़की पसन्द आयी हो तो आप इस चुनौती का सामना ज़रूर करेंगे।

उस गाँव की रीति के बारे में मालूम होते ही लड़की देखने आये युवक पसीना–पसीना होने लगे। कुछ न सूझने पर बस एक दूसरे की ओर देखने लगे और तब उन्हें अपने साथी बूढ़े बाबा की याद आयी। उनमें से एक ने कहा "ज़रा रुकिए हमारे एक साथी ज़रा पीछे रह गए हैं, उन्हें ले आते हैं"। तुरन्त वे उसे ले आने के लिए निकल पड़े। वापस आये युवकों को देख बूढ़े बाबा ने पूछा, "क्या हुआ बच्चों, जिस काम के लिए गए थे उसका क्या हुआ? कच्चा फल या पका फल ? सबने वहाँ जो कुछ हुआ था सब कुछ बता दिया और उसे अपने साथ चलने का आग्रह करने लगे। बूढ़े बाबा ने मन ही मन कहा, "मुझे छोड़कर गए थे ना? ऐसा ही होना चाहिए था।" वह उनके साथ साथ उस घर की ओर चल दिया। सब वहाँ पहुँचे। बूढ़े बाबा ने कहा "क्या बात है? धान के छिलके से डोर

बनानी होगी। इतना ही ना? ज़रूर बना देंगे। वे पहले 'बुट्टि' में पानी ला दें, फिर धान के छिलके ला दें। उसके बाद हम ज़रूर रस्सी बनाएँगे।" इस तरह बूढ़े ने उस गाँव के लोगों के ही सामने एक चुनौती रख दी। गाँव के मुखिया को बूढ़े का ऐसा अनुभव से प्राप्त ज्ञान बहुत भा गया। बूढ़ा अच्छी तरह जानता था कि न तो लकड़ियों को जोड़कर ऐसी टोकरी बनायी जा सकती है कि उसमें पानी लाया जा सके और न ही धान के ऊपरी हिस्से से रस्सी बन सकती है। इस तरह चुनौती के बदले यह एक चुनौती थी।

बुट्टि= बैंत या सूखी लताओं से बनायी गयी डोरियों की टोकरी जिसमें छोटे-बड़े छेद होते हैं

दो का दूल्हा, सिरपर टोपी

एक बार जब सिर के बाल पकने लगे थे तब एक आदमी के मन में एक युवती से शादी करने की इच्छा हुई। उम्र हो चली थी। पहली पत्नी बूढ़ी हो गई थी, बेकार सी लग रही थी। इसलिए वह आखिरकार एक युवती को अपनी पत्नी बनाकर ले आया। एक बीवी बूढ़ी तो दूसरी जवान। दोनों बीवियों ने मिलकर इस बूढ़े की नाक में दम कर दिया। कैसे ? सुनिए वह कहानी इस तरह है।

बूढ़ी पत्नी ने क्या किया पता है ? उसने सोचा कि जैसे मैं बूढ़ी हूँ इन्हें भी तो बुढ़ा ही होना चाहिए। रात को जब पति सो रहा था तब उसने रोज़ धीरे-धीरे एक एक कर उसके सारे काले बाल उखाड़ना शुरू किया और युवा पत्नी ने भी सोचा कि मेरे पति की उम्र भी ज़्यादा नहीं लगनी चाहिए। इसलिए उसने सफ़ेद बाल उखाड़ना शुरू किया। पर उन दोनों ने बिना एक दूसरी को बताए यह काम कैसे कर डाला यह न पूछें क्यों कि यह बहुत ही निजी सवाल है। खैर के जैसे हो गया।

इन दोनों पत्नियों की ऐसी व्यवस्था के कारण बेचारे पति की जो हालत हुई उसका बयान भी नहीं किया जा सकता। उसके सिर पर चाँद आ गया था। सिर ऐसा खाली हो गया था कि मन्नत पूरी करने हेतु भी किसीको यदि सफ़ेद या काला बाल चाहिए होता तो उसके सिरपर मिलना मुश्किल हो गया था। सान के पत्थर की भाँति खोपड़ी चमक रही थी। अब क्या कहा जा सकता है ? दो बीवियों के होने से तो ऐसा होना था। सिरपर टोपी रखे बगैर अब वह कहीं आ जा नहीं सकता था। दो बीवियों के कारण उसने अपने आपको ऐसे हालत में डाल रखा था कि कोई भी उसे देखकर दूसरी पत्नी के ख़याल से भी तौबा कर ले।

जैसे एंकु पणंबूर गया

एक रात पति ने अपनी पत्नी से कहा "कल पणंबूर जाना होगा ना?" पत्नी ने जवाब में कहा " तो क्या हुआ हमारा एंकु है ना?" उसपर पति ने कहा "हाँ यह भी ठीक है।" बाहर बरामदे में सोया एंकु पति–पत्नी की बात ध्यान से सुन रहा था ।

दूसरे दिन सुबह एंकु को पणंबूर भेजने के लिए देखा तो एंकु गायब! भैंसों को सूखी घास खिलाने या मवेशियों को खिलाने के लिए चावल का पानी गरम करने गया होगा सोचकर दो घड़ी राह देखी पर एंकु का कहीं पता न था । "पता नहीं सुबह–सुबह कहाँ भटकने गया होगा ।" सोचकर उसे लगे ढूँढने । थोड़ी ही देर में दाँतौन करते हुए खेत की मेंड़पर से आता हुआ एंकु दिखायी दिया । जैसे ही उसने आँगन में पैर रखा गुस्से से उसे पूछ डाला "इतनी सुबह–सुबह कहाँ गयी थी तुम्हारी सवारी?" छूटते ही एंकु बोल उठा "कल आप लोग ही तो बोल रहे थे ना कि एंकु को एक बार पणंबूर भेजना होगा, और अब आप लोग ही पूछ रहे हैं कि मैं कहाँ गया था?" इसपर उससे पूछा, "अच्छा तो तू पणंबूर हो आया है ना, तो बता वहाँ क्यों गया था? क्या काम हुआ?" इतना सुनना था कि एंकु बोला "मुझे क्या मालूम? आपने कब मुझसे कहा कि मुझे वहाँ जाकर करना क्या होगा? आपने कहा था कि मुझे भेजना होगा तो मैं वहाँ तक हो आया ।" इतना सुनते ही पति–पत्नी ने लंबी–सी साँस छोड़ते हुए कहा, "लो ऐसा है हमारा एंकु" उस दिन से एक नयी कहावत बन गयी "जैसे एंकु पणंबूर गया" बिलकुल इसी तरह कहते हैं, "कुट्टि एक बार कुंदापूर गया था ।

आचक्का सोयी है; मैं बैठा हूँ!

जब घर में पूरी गर्भवती स्त्री हो तब न जाने कब बच्चा पैदा होगा ? जाने कब उसे पेटदर्द शुरू होगा ! कुछ कहा नहीं जा सकता। हो सकता है मध्यरात्रि में ही शुरू हो जाए! उस समय जाकर किसी दाई को बुला लाना पड़ सकता है । यदि घर में सिर्फ़ पति–पत्नी दो ही जन हों तो माँ–बच्चे की देखभाल कौन करेगा ? और कभी–कभी तो दाई के आने से पहले ही बच्चा पैदा हो जाता था। कभी कोई दूसरी ही समस्या सामने आ जाती थी। पैदा हुआ बच्चा कभी अजीब–सा होता, कभी एक दूसरे से चिपके हुए जुड़वाँ बच्चे, कभी किसी बच्चे के सिरपर सींघ जैसा कुछ होता, कभी किसी बच्चे के तीन पैर होते । ऐसे एकाध नहीं बल्कि कई तरह की समस्याएँ खड़ी होने का खतरा बना रहता था ।

एक घर में सिर्फ़ पति–पत्नी ही थे। पत्नी गर्भवती थी। रात क समय था। उसके पेटदर्द शुरू हुआ । रात के समय जाकर किसे जगाएँ? कोई और उपाय न सूझकर पत्नी को अकेली ही वहाँ छोड़कर दाई को लाने पति को जाना ही पड़ा। वह कहाँ पास ही में रहती थी ? खाली खेत, खुले मैदान, पहाड़ी, जंगल वगैरह लाँघकर जाना पड़ा ।

जब तक पति दाई को साथ लेकर लौट आया यहाँ बच्चे का जन्म हो चुका था। कैसा अचरज देखो ! वह नवजात पैदा होते एक ही पल में उठ बैठा था । आँखें खोलकर माँ को देख रहा था। इतना ही नहीं बैठा हुआ वह शिशु अबके उठकर खड़ा हो गया । माँ से भी बहुत बड़ा हो गया । जैसे ही हवा बहने लगी वह बढ़ते–बढ़ते छत तक पहुँच गया । अब वह शिशु नहीं बल्कि एक बड़ा आदमी बन गया था ।

यह सब सचमुच ही बड़ी विचित्र सी बात थी। पर वह वहाँ ही खत्म नहीं हुई। लंबा–चौड़ा होकर दैत्य की भाँति अब वह इतना बढ़ गया था कि पकड़ में नहीं आ सकता था। भूख के मारे वह चीख उठा। प्रसव की वेदनाओं को जिस माँ ने अभी–अभी सहा था वह क्या दे सकती थी। ऐसे राक्षस की तरह पैदा हुए बेटे को देखकर वह दंग रह गयी होगी, शायद उसका सिर चकरा भी गया होगा। उसकी उस हालत के बारे में और क्या कहा जा सकता है ? दैत्याकार पुत्र ने अपनी माँ की छाती से लगकर दूध पीने के बदले उसका खून ही पी लिया। खून पीकर उसने उसे मार ही डाला ।

यहाँ इतना कुछ हो गया और तब पति दाई को लेकर आ गया। पर अन्दर से न कराहने की और न ही दर्द के मारे करवटें बदलने की कोई आवाज़ आ रही थी। इसलिए दरवाज़ा खोलने से पहले खिड़की से ही अन्दर झाँकते हुए उसने पत्नी को पुकारा "अच्चक्का अच्चक्का" और तब अन्दर से स्वर सुनाई दिया । "अच्चक्का सो रही है, मैं बैठा हूँ ।" पति ने फिर से अन्दर झाँका तो क्या देखा अपनी माँ की छाती पर बैठकर वह खून चूस रहा था। यह भयानक दृश्य वह ज़्यादा देर तक देख न सका। उसके पाँव ज़मीन से उखड़ रहे थे । वह कुछ भी नहीं कर सकता था । तभी एक खयाल आया और जाकर बन्दूक ले आया। अब उस राक्षस संतान को मारने के अलावा उसके पास और कोई चारा न था ।

तुम्हारे पेट का एक हिस्सा हमेशा खाली रहे

श्रीकृष्ण अपनी गायों को चराने ले गये हैं । जब चराने के लिये ले जाते हैं तो सुबह से शामतक क्या पहाड़ क्या मैदान बस चराते हैं । अपने मकरंद आदि साथियों को गौओं की रखवाली के लिये रखते हैं । उनके हाथ में मोहन मुरली है । गौओं को चरने छोड़कर खुद किसी पेड़पर चढ़कर बाँसुरी बजाने लगते हैं । उनका यह बाँसुरीवादन वन के सभी पशु-पक्तियों को लुभाता है ।

जब लौटने का समय हो जाता तो बाँसुरी बजाकर ही गौओं को संकेत दे देते कि चलो अब लौटना है । अपने साथी गोपालों के साथ दिनभर लट्टू, गुल्लि-डंडा आदि खेलकर मज़े से समय बिताते । गौओं के समूह में घुसकर यदि कोई गऊ चुराने का प्रयत्न करता तो उसे मारकर भगा देते । जो गायें-बछड़े चल नहीं पाते उनके साथ धीरे-धीरे चलते । गाभिन गायों के साथ भी धीरे-धीरे कदम बढ़ाते । यदि किसी गाय के पहाड़ीपर चरते-चरते ही बछड़ा हो जाता तो मकरंद से उसके घर कहलवा भेजते । मकरंद जाकर कहता "माँजी आपकी गाय ने पहाड़ीपर एक बछड़े को जन्म दिया है । श्रीकृष्ण ने मेरे हाथों यह संदेश भेजा है । मैं मकरंद , आइये माँजी, जहाँ यह सब हुआ वह जगह मैं आपको दिखा देता हूँ ।"

जो गायें अँधेरा छाने के बावजूद तबेले की ओर न मुड़तीं और चरती रहतीं उन्हें उनके नाम से पुकारते " मैरे आओ, बाचा आओ, गेंदे आओ, राधे आओ, गिरिजा आओ"|

जब गायें हरीभरी घास पेटभर चरकर पानी पीकर लौटतीं तब उनके दोनों ओर से फूले हुए पेट देखकर श्रीकृष्ण बड़े खुश होते । ऐसी गायों को देखकर उनकी छाती खुशी से फूलती और सारी थकान मिट जाती ।

एक बार एक भैंस चरती ही जा रही थी । श्रीकृष्ण ने उसे पुकारते हुए कहा "देखो शाम ढल रही है , साये भी लंबे हो चले हैं, यानी समय हो चला है । अब बस हो गया, चरना छोड़कर घर की ओर चल ।" उन्होंने वापसी की धुन बजाकर लौटने की याद दिलायी । पर वह भैंस लौटने को तैयार ही न थी, बोली अभीतक तो मेरे पेट का सिर्फ़ एक ही हिस्सा भरा है, दूसरा बाकी है। भगवन ज़रा रुकिये । श्रीकृष्ण कुछ देर प्रतीक्षा करते रहे । थोड़ी देर बाद फिर उन्हों ने उसे बुलाया । फिर भैंस ने वैसे ही कहा "अभी थोड़ा बाकी है।"

कई बार बुलाने पर भी जब भैंस लौट आने तैयार ही न हुई तो श्रीकृष्ण को गुस्सा आया और वे बोले "क्या तेरे पेट का दूसरा हिस्सा कभी भरेगा ही नहीं? अगर ऐसा है तो तेरे पेट का वह हिस्सा कभी भी न भरने पाये ।" इस तरह उन्होंने पूरे गऊ कुल को ही शाप दे दिया । शायद इसी कारण आज भी भैंस, गाय, बैल, भैंसा आदि के पेट का एक हिस्सा कभी नहीं भरता । इस तरह आजतक श्रीकृष्ण का शाप चला आ रहा है ।

रस्सी को खाकर पूछ रही है रस्सी कहाँ है

एक गाँव में एक किसान था। सुबह जाकर खेत में हल चलाकर, बैलों को चरने के लिए छोड़कर जब वह घर वापस आता तब दोपहर हो जाती। लेकिन इतनी दोपहर हो जाने के बाद भी उसकी पत्नी उसे खाना नहीं परोसती थी। जब वह उससे खाना लगाने कहता तो अक्सर उसे उत्तर मिलता "खाना तैयार नहीं है।" आखिर बेचारा कब तक यह सहता! उसने एक दिन इसी बात को लेकर अपनी नाराज़गी दिखायी। गुस्से में उसने पत्नी को खूब खरी–खोटी सुनायी।

लेकिन पत्नी थी कि अपने पती के गुस्से से बिल्कुल ही नहीं डरी।

बोली "आपका क्या? जब जाते हैं तो आपको बस एक ही काम करना होता है। लेकिन मुझे घर में कितना सारा काम करना होता है कुछ पता भी है आपको? उसने अपने मन की भड़ास निकाल ही दी। पत्नी का ऐसा प्रश्न सुनते ही किसान ने कहा "तो ठीक है। कल से खेत में हल चलाने तू ही जा। मैं घर का काम संभालूँगा।" इतना सुनना था कि पत्नी बोली " ओहो ! आप क्या समझते हैं कि मैं खेत में हल चलाना नहीं जानती? तो ठीक है। कल से मैं खेत का काम संभालूँगी और आप घर का काम देख लीजिये।" दोनों इसपर राज़ी हुए।

दूसरे दिन पत्नी खेत में जानेयोग्य कपड़े पहन तैयार हो गयी। बैलों की जोड़ी को लिये खेत की ओर चल पड़ी। बैलों को हल से बाँधकर खेत जोतने लगी। दूसरी ओर पति

रसोई बनाने में लग गया। चावल पकाये पर चावल के साथ तरकारी कौन सी होगी सोचने लगा। सोच रहा था , पत्नी को आज सबक सिखाकर ही रहूँगा। सोचते सोचते कुएँ के पास गया और वहाँ से पानी खींचने की रस्सी उतार ली। घर आकर उस रस्सी को काट-काट कर बिल्कुल छोटे-छोटे टुकड़े बनाए और उन टुकड़ों की ही उसने तरकारी बना डाली।

इधर खेत जोतते हुए पैरों को खींच-खींचकर पत्नी बहुत थक गयी थी। किसी तरह घर वापस आयी। बैलों को बगैर धोए ही चरने के लिए छोड़ दिया और पति से पूछा, "क्या खाना तैयार है ?" किसान ने तुरन्त जवाब दिया "हाँ तैयार है ।" उसने पत्नी को खाना परोसा। पत्नी को बहुत भूख लगी थी। क्या तरकारी बनी है पूछना ही भूल गयी | भूख भी ऐसी लगी थी कि उसे तरकारी की वस्तु का पता ही नहीं चला और बार-बार वही तरकारी ले लेकर उसने खाना खा लिया।

खाना खाने के बाद उसने पूछा हाथ धोने के लिए पानी कहाँ है ? जवाब मिला कुएँ की जगतपर है। वहाँ जाकर पत्नी ने देखा कि घड़ा तो खाली है और पानी खींचने की रस्सी भी कहीं दिखायी नहीं दे रही। उसने वहीं से गरजकर पूछा "रस्सी कहाँ है ?" पति ने भी उसी स्वर में जवाब दिया "क्यों रस्सी ही खाकर अब पूछती हो रस्सी कहाँ है?" इस तरह किसान ने अपनी पत्नी को सबक सिखाया।

बंग और चौटा के बारे में जानकर तुझे क्या मिलेगा मेरे बेटे! तू बस एक बार खाना ले मेरे लाड़ले !

एक ब्राह्मण की पत्नी अपने पति से छुपछुपकर मछली खाया करती थी और अपने बच्चों को भी खिलाया करती थी ।

एक बार जब वह 'बंगुड़े मछली' गरम कर खाना खा ही रही थी कि तभी उसके पति को आ जाना था ! यदि पति को पता चल जाये कि मैं मछली खाती हूँ तो सारा काम बिगड़ जायेगा, सोचकर उसने तुरंत मछली छुपा दी । पर उसका बच्चा ! वह कहाँ माननेवाला था! माँ मछली दे नहीं रही थी यह देखकर उसने फुसफुसाना शुरू किया । अभी खाने में मछली क्यों नहीं दे रही हो ? आँखों में यह सवाल लिये वह माँ की ओर देखने लगा और "माँ बंगले, माँ बंगले" कहने लगा । पत्नी को बड़ी दुविधा हुई । वह अपने आप से कहने लगी 'हाय राम! यह बात अगर पति को पता चल गयी तो खैर नहीं! अब मैं क्या करूँ?' तभी उसे एक युक्ति सूझी और "बंग और चौटा के बारे में जानकर तुझे क्या मिलेगा मेरे बेटे! तू बस एक बार खाना ले मेरे लाड़ले !" कहती हुई, बच्चे को बहलाती हुई उठाकर वहाँ से फ़ौरन चल दी ।

वि. सू.– बंग तथा चौटा दोनो तुलु राजवंश हैं ।

बड़े भैया को शनिवार,
कुतिया को फलाहार, सासूजी को मार ही मार

शुक्रवार, शनिवार, अमावस इन दिनों में व्रत रखनेवाले भी होते हैं। व्रत रखनेवालों के लिए उन दिनों में भोजन नहीं बल्कि सिर्फ़ फलाहार लेना होता है ।

ऐसे ही एक पति को शनिवार का व्रत था । पति के लिए खाने-पीने की व्यवस्था कर पत्नी पड़ोस के घर जाकर बातों में लग गयी । यहाँ रसोईघर में एक कुतिया घुसी और फलाहार के लिए जो कुछ भी निकालकर रखा हुआ था उसे चट कर गयी ।

जब पति नहा-धोकर आया तो उसने देखा फलाहार खाली हो गया है । घर में उसकी सासूजी को छोड़ और कोई नहीं था । सासूजी पर तो वह यों भी नाराज़ ही रहता था । उसे यकीन हो गया कि मेरे लिए रखा हुआ फलाहार ज़रूर सासूजी ही निगल गयी होंगी । वैसे भी पत्नी घर पर नहीं थी यह गुस्सा तो पहले से ही था । उसने सारा गुस्सा सासूजी पर ही उतारा । फलाहार खा डालने की गलती के लिए उसने सासूजी की खूब पिटाई की । बेचारी सासूजी ! कोई और अपना न होने की वजह से इन लोगों के यहाँ रहा करती थी । पहले से ही दामाद के इस एहसान तले दबी हुई थी । इस तरह दामाद की ओर से 'अच्छा फलाहार' सासूजी को मिला था । शायद दामाद की बहन ने भाई के व्रत का ऐसा परिणाम देख यह कहा होगा **"बड़े भैया को शनिवार, कुतिया को फलाहार, सासूजी को मार ही मार"** और यह कहावत बन गयी होगी ।

वैद्यजी के हाथ का गुण

मंजप्पण्ण की पत्नी को न जाने कैसा दर्द हो रहा था कि अब और उसे सहना उसके लिए बहुत कठिन हो रहा था। वह जिस तरह से तड़प रही थी मंजप्पण्ण से देखा न गया। इसलिए वैद्य जी को लिवा लाने के लिए वह चल दिया। परन्तु उस समय वैद्यजी कहीं गये हुए थे। उसने वैद्य जी के घरवालों से पूछकर जान लिया कि वे किस ओर गये थे। मंजप्पण्ण को लगा शायद रास्ते में ही वैद्यजी से मिलना हो सकेगा। इसलिए वह उस ओर चल पड़ा। वैद्य जी को पालकी में बिठाकर ले जा रहे थे क्यों कि उनके दोनों पैर नहीं थे।

मंजप्पण्ण को बड़ी खुशी हुई और उसने वैद्य जी के हाथ पकड़कर उनसे बड़ी विनय की, कि किसी भी तरह मेरी पत्नी को वेदनाओं से मुक्ति दिलाएँ। वैद्यजी सोच में पड़ गये जैसे कोई धर्मसंकट उनके सामने आ खड़ा हुआ था। बात यह थी कि उनके पास उस समय न ही औषधियों की कोई पोटली ही थी और न ही कोई चूर्ण। सब कुछ घर में ही छोड़कर वे आ गये थे। पर जो आदमी मुझपर ही इतना भरोसा कर यहाँ तक आ गया है उसे कैसे इनकार करें ! और यदि औषधि देने से उस समय मना भी कर देते तो भी मंजप्पण्ण कहाँ उनकी सुननेवाला था ! उसके लिए तो वैद्यजी ही भगवान थे।

खैर, बैठे-बैठे ही पंडितजी ने कुछ सोचा। उन्होंने अपनी दोनो हथेलियों को एक दूसरे पर रगड़ा। पसीना, मैल आदि की वजह से हथेलियों पर काली सी परत सी जमा हो गयी। उसी की गोली सी बना ली। मंजप्पण्ण के हाथ में उसे देकर उन्होंने कहा "इस गोली को एक पत्ते के रस में घोलकर देना।" इसके बाद उन्होंने कुछ पथ्य भी कहे।

रोग ठीक हो इसके लिए दवा के साथ साथ हाथ का गुण भी तो चाहिये ना !

मनुष्य से भी बढ़कर कोई बड़ा भूत है ?

जब चार लोग एक जगह जमा हो जाते हैं तब गप्पे हाँकना, इधर की उधर उधर की इधर करना, किसीका मज़ाक उड़ाना, कहानी सुनाना यह सब तो होता ही रहता है । ऐसे में अपनी होशियारी भी कोई–कोई ज़रूर दिखाना चाहते हैं । इसके लिए वे कोई बाज़ी लगाते हैं या ऐसा कोई खेल रचते हैं जिसमें वे अपनी जीत की मुहर लगा सकते हैं ।

एक बार ऐसे ही कुछ युवक एक जगह जमा हुए थे । उनमें से एक ने सबके सामने एक सवाल रखा । "मध्य रात्रि के समय स्मशान या जहाँ लाशों को जलाया जाता है वहाँ तुममें से कोई सो सकता है?" यह सुनते ही एक युवक उठ खड़ा हो गया और उसने कहा, "मैं, मैं सो कर दिखाऊँगा वहाँ ।"

वह युवक बड़ा ही हिम्मतवाला था । उसी रात वह बाज़ी जीतने के इरादे से निकल पड़ा । वह एक स्मशान गया । एक दिन पहले ही शायद किसी की चिता वहाँ जलाई गयी थी । अभी तक वह आग पूरी तरह बुझी न थी । एकाध चिंगारी वहाँ से उठ रही थी । यहाँ–वहाँ कुछ कबरें थीं । चारों ओर गहरा अंधेरा पसरा हुआ था । लेकिन इस युवक को कोई डर न था । अकेला ही वहाँ सो गया ।

कभी–कभी चिता में से जब कोई चिंगारी उठती तो ही कुछ आवाज़ आती वरना चारों ओर सिर्फ़ सन्नाटा था । हाँ दूर से कुत्ते के भौंकने की आवाज़ कभी–कभी सुनाई देती । आधी रात ऐसे ही गुज़र गयी पर फिर अचानक चारों ओर से ज़ोर–ज़ोर से चीखने चिल्लाने की आवाज़ें सुनायी देने लगीं । अब तक गाढ़ी नींद में सो रहा युवक सहमकर उठ बैठा । उसे लगा कहीं से कोई गर्दन मरोड़ रहा हो । कभी यों लगा जैसे कोई प्रेत किसीको बाँह से उठाकर पटक रहा हो ! युवक को पता भी न चला कि कब उसने चीखना शुरू किया । अपनी ही चीख सुनकर वह बेहोश होकर वहीं गिर पड़ा ।

बेहोश पड़ा हुआ बेचारा नहीं जानता था कि उसे हराने के इरादे से उसके साथी वहीं चिता के पास ही छुपकर बैठे हुए थे । जिन्हें कभी किसी चीज़ का कभी डर नहीं रहता वे भी अन्दर से पूरी तरह डर जाएँ ऐसा कुछ करनेवाले भी तो होते ही हैं । भूत, प्रेत, पिशाच ऐसा कुछ नहीं होता । हमारे साथ रहनेवाले लोग ही सबसे बड़े पिशाच होते हैं । हमारे मन का डर ही सबसे बड़ा भूत होता है ।

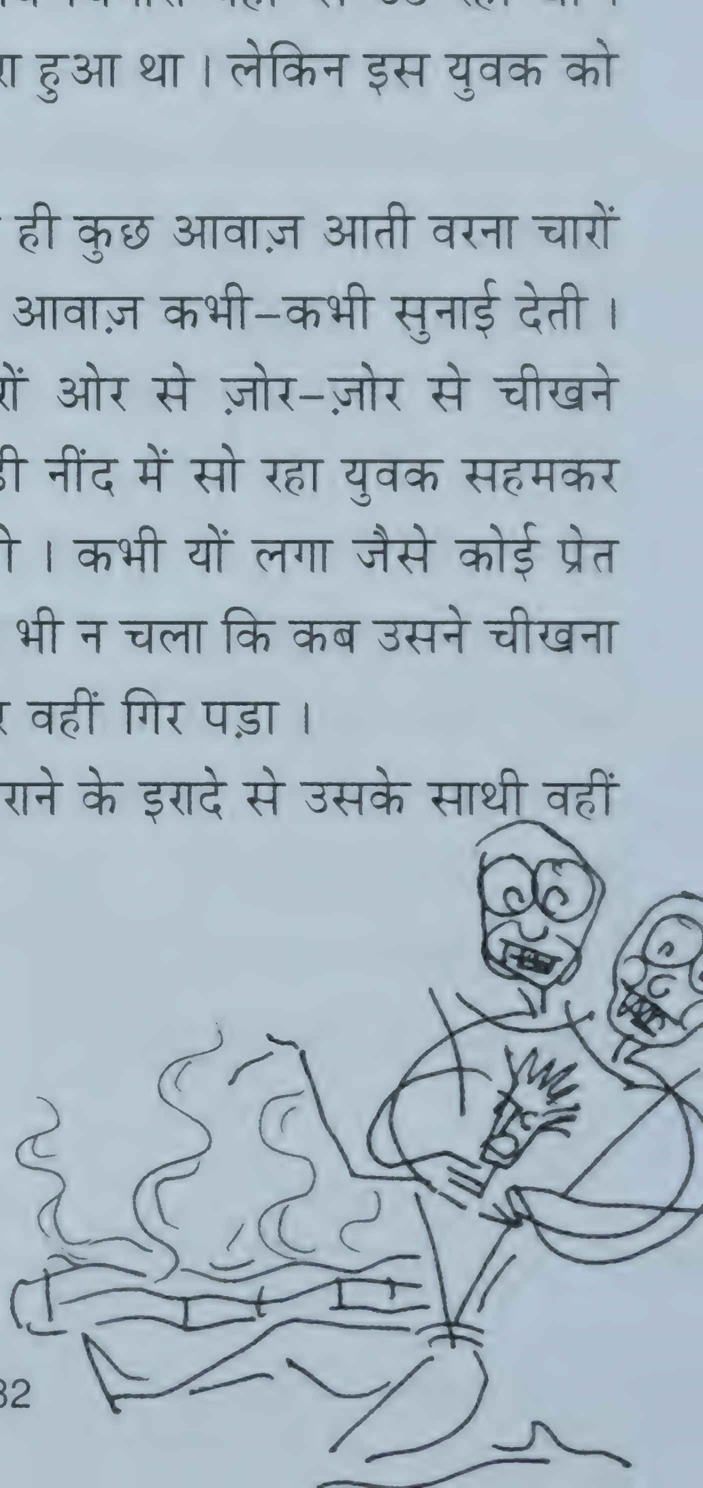

खाते ही सोना चाहिए, उठते ही खाना चाहिए

एक बार एक घर में विवाह तय करने संबंधी बात करने कुछ लोग आये हुए थे । ऐसे समय में वधू के यहाँ कोई मेहमान आनेवाले हों तो पहले से ही पता होता है । आये हुए मेहमानों का खूब स्वागत हुआ । मेहमानों ने अपने आने के उद्देश्य के बारे में बताया । विवाहेच्छु वर–वधू के गोत्र आदि का जब ताल–मेल ठीक बैठा तब लड़केवालों ने कहा यदि आपका मन हो तो लड़की को दिखा सकते हैं ।

अन्दर के दरवाज़े की ओट में खड़ी लड़की के कान उन बातों की ओर ही थे । वह रोमांचित हो उठी । ऐसा लगा कि दिल की धड़कनें बढ़ गयीं ।

लड़की को सजाया गया । उसके हाथों में गागर देकर पानी ले आने के लिए भेजा गया । लड़की देखने आये हुओं ने उसे अन्दर से चलकर बाहर आते देखा साथ ही उसे भी देखा । वह शर्म से पानी–पानी हो गयी । दोनों पत्तों को वधू–वर भा गये ।

अपने लड़के का बखान कर फिर लड़केवालों ने पूछा "आपकी लड़की कैसी है?"

"हमारी बेटी भी रूप और गुण में कम नहीं है । पर... उसकी एक आदत के बारे में आपको बताना ही होगा । उसकी आदत है कि कुछ खाते ही उसे नींद आती है और जब सोकर उठती है तब उसे कुछ खाने को चाहिए होता है, और जब वह फिर कुछ खा लेती है तब उसे सोना ही पड़ता है ।"

लड़केवालों को यह कुछ खास बुरा न लगा । लड़की उन्हें पसन्द थी । इसलिए उन्होंने कहा, " बस इतनी सी बात ! हर एक को जब पेट है तो उसे भरना ही होता है वैसे ही आँखें हैं तो नींद भी आएगी ही । इसे बुरी आदत तो नहीं कहा जा सकता ।"

बस फिर क्या ? शादी का दिन ही पक्का न हुआ बल्कि शादी हो भी गयी । लड़की की विदायी हुई । ससुराल जानेपर लड़की एक कोने में लेट गयी और वहीं उसकी आँख लग गयी । सास, ननद ने जाकर उसे खाना खाने उठाया । वह उठी, थाली में जो भी परोसा गया उसे खाकर फिर से जाकर सो गयी ।

सब ने सोचा, नयी जगह, नये लोग। बैठे-बैठे बेचारी ऊब गयी होगी। कल-परसों तक सब ठीक हो जाएगा।

पर लड़की ने अपनी आदत न छोड़ी। खाना खा लेना और सो जाना। यह ऐसे ही चलता रहा। सास-ससुर, पति सब यही सोचकर रह गये कि कुछ दिनों में ठीक हो जायेगी। मायका छोड़कर आयी है तो ऊब जाना स्वाभाविक ही है। वे उसके ठीक होने का इंतज़ार करते ही रह गये। पर बहू की आदत न छूटी। उसकी इस आदत से धीरे-धीरे ससुरालवालों का दम घुटने लगा पर आदत थी कि छूटने का नाम ही न ले रही थी। पति तो बेहद परेशान हो गया। "क्यों मैंने इससे शादी की" सोच-सोचकर बेचारा और भी परेशान हो रहा था। जब उसे नींद से जागाया जाता है तो फ़ौरन खा लेना चाहती है और खाते ही सो जाती है। यह आदत छुड़वाने के लिए मध्यरात्रि तक खाना न देकर बाद में उठाने पर भी उसकी आदत में कोई बदलाव न आया क्यों कि तब भी खाना खाते ही सो जाती। उसकी इस आदत से बाज़ आकर दामाद ने अपने सास-ससुर को बुला भेजा। "ऐसी लड़की को आपने मेरे गले क्यों बाँधा ? मुझे यह नहीं चाहिए। आप ले जाइए इसे।" कहते हुए उसने नाराज़गी दिखायी। पर अब लड़की के माँ-बाप क्यों मानने लगे? उन्होंने कहा, "हमने आपसे यह बात छुपायी तो न थी। इसे जानने के बाद भी आप शादी के लिए राज़ी हो गये थे, तो इसमें हमारी गलती कैसे हुई?" इस समस्यापर बहुत सोचकर लड़्की के पिता दामाद को एक ओर ले जाकर बोले, "देखिए अब इसपर ज़्यादा बोलने से कुछ न होगा। कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे उसकी यह आदत ही छूट जाए।" इसपर दामाद बोला, "पर क्या करने से ऐसा हो सकता है?" ससुर जी ने कहा, उपाय बहुत ही सरल है। किसी तरह इसके एक बच्चा हो जाना चाहिए। फिर देखते हैं क्या होगा।"

ससुर जी की सलाह दामाद ने मान ली और वह एक बच्चे का बाप बन गया। बच्चे के चीखने-रोने के कारण उसे चुप कराते-कराते, खाना खाते ही सोने की और उठते ही खाना खाने की आदत कब छूटी इसका बच्चे की माँ को पता ही न चला ! कैसी रही यह तरकीब?

समारोह में दिखाये गये गहने

एक बार एक माँ अपने बेटे और बेटी को साथ लेकर एक समारोह में शामिल होने गयी। जाने से पहले माँने अपने कानों में नये गहने पहने और बेटी की नाक में नयी नथनी, बेटे की उँगली में नयी अँगूठी भी पहनायी थी। उसने सोचा था वहाँ लोग इन गहनों को देखकर ज़रूर कुछ न कुछ तो पूछेंगे, मगर ऐसा हुआ नहीं। किसीने उन गहनों के बारे मे कुछ भी नहीं पूछा। "इसमें कितना सोना लगा?, यह तो बहुत ही खूबसूरत है। आप पर यह बहुत ही फबता है।" ऐसा कुछ न कुछ तो ज़रूर कहेंगे इसका उसे यकीन था। पर हुआ कुछ और ही ! न तो ऐसा किसीने पूछा और न ही किसीने उन गहनों के बारे में कोई दिलचस्पी दिखायी। फिर उसने सोचा कि जब खाना खाने सब बैठेंगे तब ऐसा कुछ पूछे बिना नहीं रहेंगे। कोई न कोई तो इन गहनों को ज़रूर देखेगा और कुछ तो पूछेगा। पर ऐसा हुआ नहीं। वहाँ भी न किसीने देखा और न ही किसीने उनके बारे में कुछ जानना चाहा। अब यह औरत किसी तरह से इन गहनों को दिखाना ही चाहती थी। सबको उनके बारे में कहना चाहती थी।

खाना खाने सब एक पंक्ति में बैठे थे। केले के पत्ते सामने बिछे थे। पत्तों पर पानी डाला गया। फिर चावल और व्यंजन परोसा गया। सबने खाना खाना शुरू भी किया। फिर से चावल परोसने के लिये जब आये तब इस गहनोंवाली माँ ने 'नहीं चाहिए' कहने के लिए अपनी गर्दन ऐसी हिलायी कि पास बैठे हुए उसे ज़रूर देखें। उसने सोचा अब भी क्या कोई कानों के कुण्डलों को नहीं देखेगा ! बेटी और बेटे ने भी कुछ ऐसा ही किया। जान बूझकर कोई चीज़ सूँघती हुई बेटी पूछने लगी कि यह क्या है? तब क्या उसकी नथनी पर किसी की नज़र नहीं जायेगी ? जब परोसनेवाले बेटे के पास आते तो वह अपनी अँगूठीवाला हाथ सामने कर , कहाँ परोसा जाये दिखाते हुए कहने लगा 'यहाँ, यहाँ परोसिये।' तब भी क्या कोई उसकी उँगली, उसकी अँगूठी नहीं देखेगा।

इस तरह पूरे समारोह में किस–किसने उन गहनों को देखा होगा, उनके बारे में पूछा होगा आप ही सोचिए और उस बारे में मुझे भी बताइयेगा ज़रूर !

वि. सू. – 'तुलुनाडु' यानी अविभाजित द.क. ज़िले में केले के पत्ते पर खाना खाने का रिवाज़ है। खाना परोसने से पहले उनपर पानी डाला जाता है ताकि लोग अपने–अपने पत्ते को पहले अच्छी तरह से साफ़ कर लें, यह भी एक रिवाज़ है। यहाँ मुख्य भोजन चावल ही होता है। बार–बार चावल परोसा जाता है और उसके साथ विभिन्न व्यंजन परोसते जाते हैं जिनके साथ चावल मज़े से खाया जाता है।

धोबी का हाथ शुद्ध, ब्राह्मण का मुँह शुद्ध

एक बार भगवान स्वयं एक ब्राह्मण के रूप में अपने कमंडल से सबको तीर्थ दे रहे थे । वहाँ एक धोबी भी आया था । उसके सिर पर धुले हुए कपडों की गठरी थी । उसने हाथ बढाकर तीर्थ तो ले लिया पर उसे वह मुँह में न डाल सका । उसे डर हुआ कि तीर्थ मुँह में डालते समय कहीं सिर पर रखी हुई गठरी नीचे न गिर जाए । इसलिए वह तीर्थ अपनी हथेली में संभालकर खड़ा रहा ।

उसी समय वहाँ आये एक ब्राह्मण ने तीर्थ लेकर मुँह में डाल लिया । धोबी उसकी ओर देख रहा था । तब भगवान सारी बात समझ गये और उसे देखकर बोले " तुम्हारा हाथ शुद्ध रहे" , फिर तीर्थपान करनेवाले ब्राह्मण की ओर मुड़कर बोले "तुम्हारा मुँह शुद्ध रहे ।" इस तरह दोनों को वरदान देकर भगवान अंतर्धान हो गये । उस दिन से कहा जाता है धोबी का हाथ शुद्ध और ब्राह्मण का मुँह शुद्ध होता है ।

इससे यह समझ लेना चाहिए कि धोबी का काम शुद्ध होता है और ब्राह्मण के द्वारा कही गयी बात शुद्ध होती है । उसके द्वारा कहे गये मंत्र शुद्ध होते हैं ।

बैलगाड़ी में स्त्री की पोषाक

नंदावर नामक गाँव में चंद्रराज नामक एक धूर्त रहा करता था। कहते हैं कि वह एक बहुत बड़ा बदमाश भी था। इस कारण गाँव में कुछ ऐसे लोग भी थे जिनसे उसकी दुश्मनी थी।

एक बार ऐसे ही किसी कारण से उसे बंगाड़ी नामक गाँव में जाकर छुपना पड़ा था। उसी समय चंद्रराज को उसकी माँ के देहान्त की खबर मिली। माँ की अंतिम क्रिया आदि के लिये उसे गाँव वापस आना ही पड़ा। चूँकि मार्ग में उसके दुश्मन घात लगाये बैठे थे

तो वह जाये तो जाये कैसे ?

चंद्रराज का एक अत्यंत विश्वासपात्र नौकर अप्पय्या बंगाड़ी जाकर एक बैलगाड़ी ले आया और चंद्रराज को किसी तरह गाँव ले आया। 'पुंजालकट्टे'' के पास पहुँचते ही वहाँ उसकी ताक में बैठे लोगों ने उसकी गाड़ी को रोक लिया। वे गाड़ी पर कब्ज़ा करना चाहते थे। पर गाड़ी में जब एक स्त्री को बैठा देखा तो उन्होंने फ़ौरन उस गाड़ी को आगे बढ़ने दिया। इस तरह दुश्मनों को पता भी न चला कि चंद्रराज शेट्टी को स्त्रीवेश पहनाकर अप्पय्या गाड़ी में ले आया था।

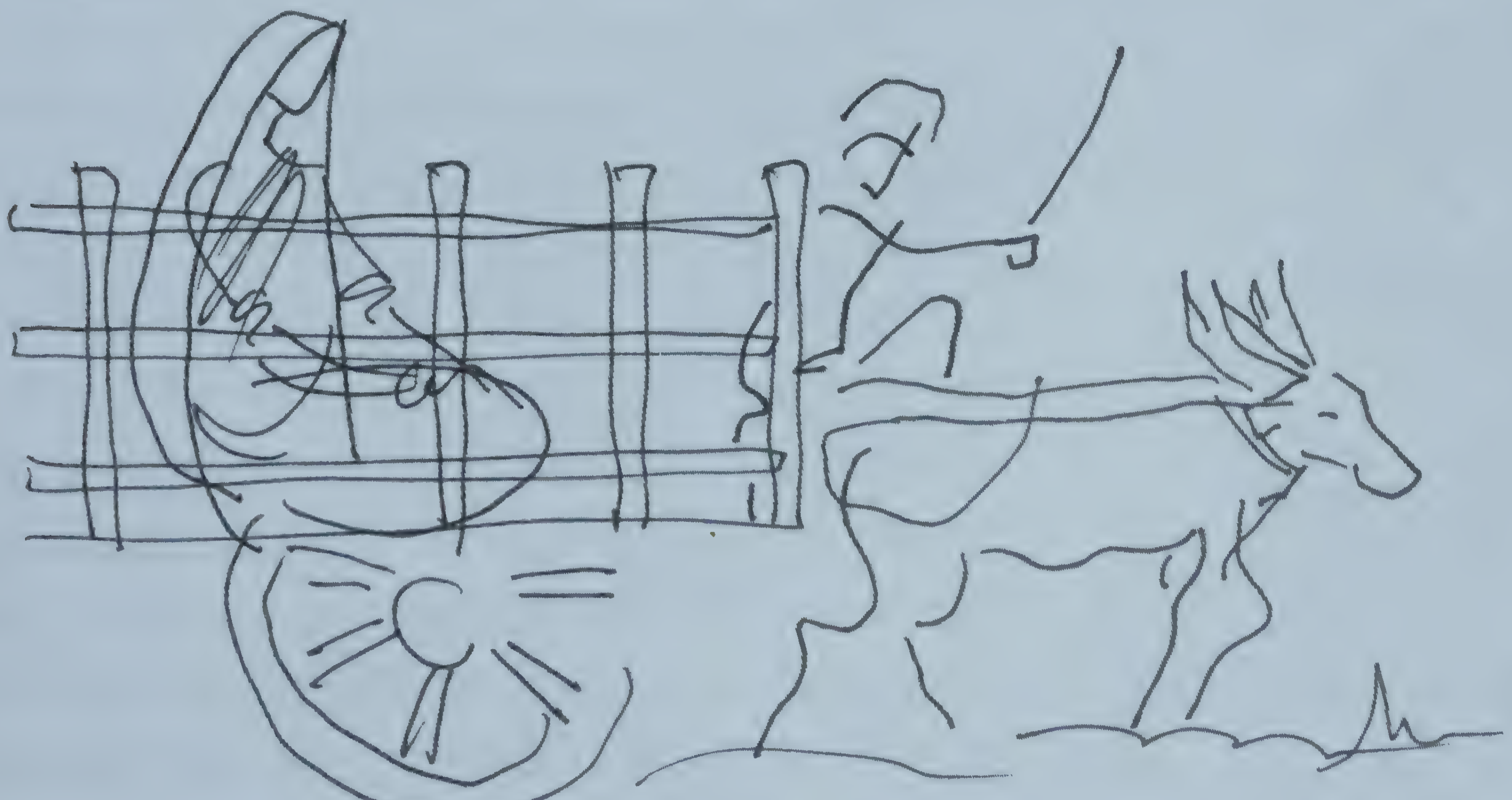

मांत्रिक मादप्पय्या और ब्रह्मराक्षस

नंदावर में निचले घर में बट्ट्या नामक एक आदमी रहता था। एक बार जब वह बाज़ार से लौट रहा था तब उसे रास्ते में पहले एक मुर्गी, फिर एक कुत्ता और फिर एक भैंसा दिखायी दिया। आखिर में उसने एक आदमी जैसा कुछ देखा। एक आदमी जो मनुष्याकार में ही था वह देखते ही देखते बड़ा और बड़ा होता गया। उसके चार हाथों में चार मशालें दिखायी देती थीं। यह देखकर बट्ट्या किसी तरह घर तो पहुँच गया पर आते ही वह बुखार से तड़पने लगा। ऐसा जो वह सोया तो फिर उठ ही नहीं पाया।

बट्ट्या की इस हालत का पता गाँव के मादप्पय्या के कानों पर पड़ी। वे एक जानेमाने मांत्रिक थे। उन्हें विश्वास हो गया कि हो न हो यह ज़रूर 'अंगणेमार' स्थान का ब्रह्मराक्षस ही है। वे उसी रास्तेपर ब्रह्मराक्षस के इंतज़ार में बैठें। जब ब्रह्मराक्षस वहाँ आया तब उन्होंने पूछा "तुम कौन हो ?"

जवाब में उसने कहा "मैं ब्रह्मराक्षस हूँ।

मांत्रिक – ओहो ! यह बात है ! सुना है कि तुम बढ़ते–बढ़ते बहुत बड़े होकर अपना चमत्कार दिखाते हो। क्या यह सच है ?

ब्रह्मराक्षस – हाँ यह सच है। क्या तुम भी मेरा असली रूप देखना चाहते हो ? दिखाऊँ?

मांत्रिक – ना बाबा ना। अच्छा यह बताओ कि क्या तुम छोटा हो सकते हो ? और यदि ऐसा कर सकते हो तो कितना छोटा हो सकते हो ?

ब्रह्मराक्षस – ओ ! यह बात है ! अरे मैं छोटा होते–होते एक मच्छर जितना हो सकता हूँ।

मांत्रिक – अच्छा ! क्या तुम छोटा होते–होते इस नारियल के छोटे से छेद के भीतर घुस सकते हो ?

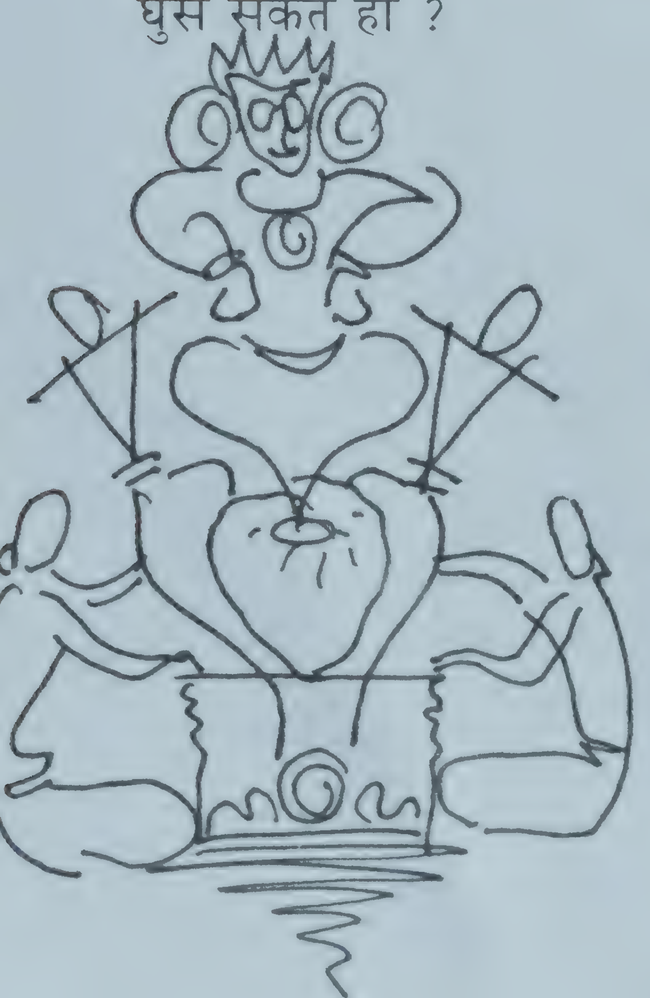

तो फिर मैं वही देखना चाहता हूँ। ऐसा कहते–कहते उन्होंने एक तांबे का नारियल दिखाया जिसमें एक बारीक–सा छेद बनाकर वे अपने साथ ले आये थे। ब्रह्मराक्षस ने इसे चुनौती मानकर स्वीकार कर लिया और वह छोटा होते–होते एक मच्छर बराबर छोटा होकर उस छेद में से भीतर घुस गया। यह देखते ही फ़ौरन मादप्पय्या ने उस छेद को बंद कर दिया और फिर उसे मिट्टी के भीतर रखकर उसे मिट्टी में ही छुपा दिया। इस तरह मादप्पय्या ने युक्ति से ब्रह्मराक्षस को नारियल के भीतर बंद कर उसकी परेशानी से लोगों को छुटकारा दिलाया। उसके बाद ब्रह्मराक्षस कभी उस तरफ़ किसीको दिखायी न दिया।

तीन बार स्नान, एक बार भोजन

एक बार गोपालकृष्ण अपने साथी बालगोपालों के साथ जानवरों को चराने वन गये थे । उन्होंने सारे जानवरों को अपने पास बुला लिया । जब उन्होंने बाँसुरी बजायी तो सब जानवर उनके पास आ गये । उन्होंने श्रीकृष्ण जी से पूछा "अभी क्यों हमें आपने बुला लिया ?"श्रीकृष्ण बोले "हर रोज़ तुम्हें कैसे रहना चाहिए यह मैं अभी बताऊँगा । कैसे रहना चाहिए ? क्या करना चाहिए ? कब नहाना चाहिए " कब खाना चाहिए ? यह सब अभी बताता हूँ , ध्यान देकर सब सुनो । कल से तुम सबको हर दिन तीन बार नहाना होगा और एक बार खाना होगा । समझे ? अगर यह नियम किसीने तोड़ा तो उसे कठोर दण्ड मिलेगा ।" ऐसा स्पष्ट आदेश उन्होंने दे ड़ाला ।

हो सकता है कोई पूछना चाहता हो कि क्या हमेशा नहाने के बाद ही खाना खाना चाहिए ? कोई –कोई जानना चाहते होंगे कि क्या खाना खाने के बाद नहा सकते हैं? नहायें नहीं तो न खाना खा सकते हैं, न सो सकते हैं ऐसे भी कुछ लोग होते हैं ।

कहते हैं शरीर का मैल निकाले बगैर, नहाये बगैर खाना खाकर सोनेवालों को भगवान तौलकर देखते हैं । यदि किसी के शरीर पर बहुत अधिक मैल हो तो वह धड़ाम से नीचे गिर जाता है । सोते हुए कुछ लोग गिर जाते हैं वह इसी कारण से ऐसा माना जाता है ।

फिर एक बार गोपालकृष्ण जी ने सभी जानवरों को पास बुलाकर पूछा दिन में कितनी बार नहाते हो और कितनी बार खाना खाते हो ? सभी जानवरों ने उत्तर में कहा, "हम हर दिन तीन बार खाना खाते हैं और एक बार नहाते हैं ।"

यह सुनकर श्रीकृष्ण जी को बहुत क्रोध आया और उन्होंने जानवरों को शाप दे दिया "आजसे तुम्हारा बोलना बंद हो जायेगा । तुम बोल नहीं पाओगे ।"

इस तरह उस दिन से जानवरों का बोलना बंद हो गया । वे बोल ही नहीं पाते ।

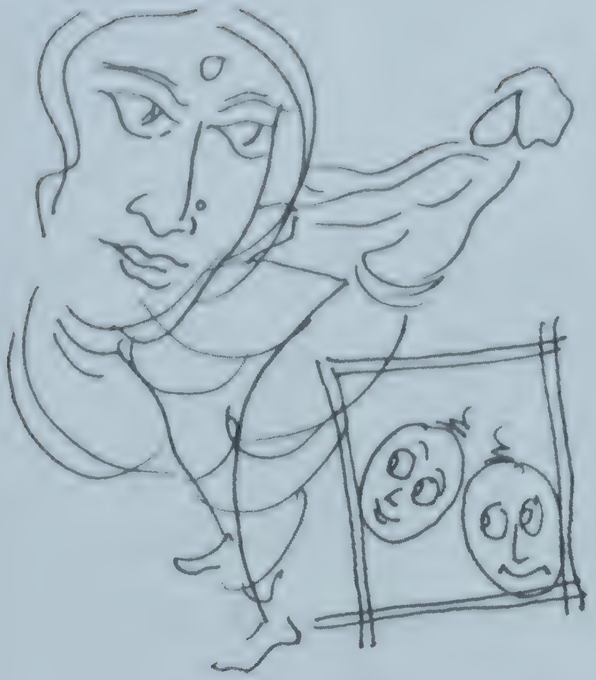

किससे प्यार –पत्नी से या बच्चों से?

एक बार एक आदमी किसी काम से गाँव से बाहर गया हुआ था।

पर एक समय ऐसा आया कि उसे अपनी पत्नी से मिलने की बहुत इच्छा हुई पर क्या कोई यह बात मुँह खोलकर किसीसे कह सकता है ? जिसने भी पूछा उससे इसने कहा अपने बच्चों को देखने जा रहा हूँ।

अब कहने को तो उसने ऐसा कह दिया पर बच्चों को देखने जाते समय कोई ऐसे ही खाली हाथ जाता है भला ? क्या वे आस से देखेंगे नहीं ? इसलिए कुछ खाने की चीज़ों की एक पोटली कमर पर धोती से लटका दी। ऐसी ही एक पोटली सिरपर और एक काँधे पर लेकर वह चल पड़ा।

जाते–जाते रास्ते में उसे एक नदी पार करनी थी। एक तो नदी में पानी बहुत था और हाथ में और सिर पर सामान भी था। इसलिए उसे नाव के इंतज़ार में बैठना पड़ा। आखिर एक नाव आ गयी। नये आदमी को देख नाववाले ने पूछा "आपको कहाँ जाना है ?" अब यह फिर सोचने लगा कि क्या इससे कहूँ कि पत्नी से मिलने जा रहा हूँ? फिर कुछ सोचकर बोला "अपने बच्चों से मिलने जा रहा हूँ।" जाने क्यों उस नाववाले को मज़ाक करने की सूझी और उसने कहा "ओह ! सुना है कि तुम्हारी पत्नी हाल ही में गुज़र गयी। क्या तुम नहीं जानते ?" यह सुनते ही वह आदमी बोला "हे भगवान ! क्या यह सच है? अरे तुम नाव को घुमा लो।" कमर पर लटक रही पोटली, सिरपर रखी पोटली सब कुछ नदी में फेंक दिया। नाव से उतरकर घूमकर देखे बिना ही वह वापस लौट गया।

अब आप ही बताइये वह किसके लिए गाँव जा रहा था पत्नी के लिए या बच्चों के लिए?

कुष्ठ रोगी बना सियार

एक बार ताड़ के पेड़ से ताड़ी इकट्ठा करनेवाला मटके में ताड़ी इकट्ठा कर चल गया। उस पेड़ के नीचे एक सियार आकर बैठा। उसने ऊपर की ओर देखा। ताड़ का पेड छोटा होने के कारण एक ही बार कूदकर वह उसके सिरे पर जा बैठा। वहाँ ताड़ी का मटका देख पचपच करते हुए वह सारी ताड़ी पी गया। पीते ही उसपर अमल चढने लगा। पकड़ ढीली हो गयी और वह नीचे आ गिरा। नीचे जोता हुआ गीली मिट्टी का खेत था। सियार ऊपर से सीधे उसी में ऐसा जा गिरा कि उसका सिर नीचे कीचड़ में दब गया। उसका सिर कीचड़ में घुस गया था और बाहर सिर्फ़ हिलती हुई पूँछ ही ऊपर दिखायी दे रही थी।

उस समय वहाँ एक विधवा ब्राह्मणी आयी और उसने देखा गीली मिट्टी के ऊपर कुछ हिल रहा था। वह समझ नहीं पायी कि वह सियार की पूँछ थी। उसे कुतूहल हुआ और उसने पकड़कर उसे ज़ोर से खींचा। जो बाहर निकल आया था वह सियार था। यह देखकर वह दंग रह गयी। सियार तुरंत वहाँ से भाग गया। भागकर वह एक तालाब तक पहुँचा और गीली मिट्टी धो डालने के लिए उसमेँ नहाया। फिर गीला शरीर पोंछ डालने के लिए पत्तों के ढेर पर लोटपोट होने लगा। ऐसा करने से कुछ पत्ते उसके शरीर से चिपक गये। जब उसने खुद को देखा तो उसे डर हुआ कि उसे कुष्ठ रोग हो गया था। इसपर उसे उस विधवा ब्राह्मणी पर गुस्सा आया। उसने सोचा "मैं तो रोज़ सूर्यनमस्कार करता हूँ। उस विधवा ब्राह्मणी ने मुझे छू लिया इसीलिए मुझे कुष्ठ रोग हो गया।"

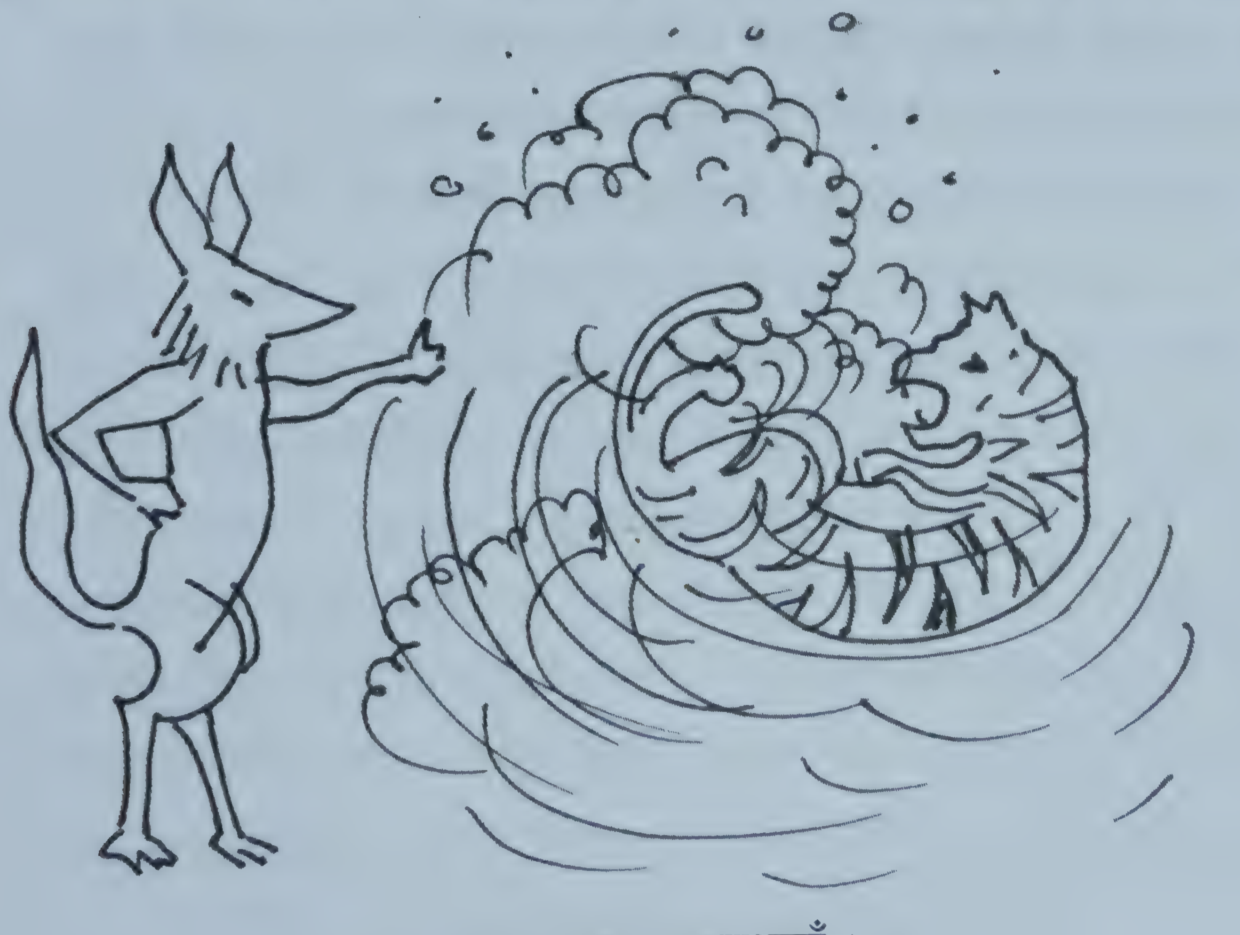

सियार की मन्नत

सियार पत्तों के ढेर पर लोटपोट होकर जब उठा तो उसे लगा कि उसके शरीर का रंग यहाँ–वहाँ बदल–सा गया है । यह देखकर सियार डर गया । उसे क्या पता कि उसके गीले शरीर पर पत्ते यहाँ–वहाँ चिपक गये हैं । वह सोच में पड़ गया । उसने यह मन्नत भी माँगी कि यदि मेरे शरीर से कुष्ठ रोग का निवारण हो जाये तो मैं समुद्र को एक बाघ दान कर दूँगा।

थोड़ी देर बाद धूप से उसके गीले बदन से चिपके पत्ते नीचे गिर पड़े । सियार यह जानकर खुश हुआ कि उसकी मन्नत सार्थक हो गयी । अब उसे दूसरी चिंता हुई कि मन्नत अब पूरी करनी होगी । समुद्र को एक बाघ दान में देना होगा । वह सोचने लगा कि बाघ को समुद्रतक कैसे, क्या कहकर लाया जाये? यह सोचते–सोचते वह बाघ को ढूँढते हुए आगे बढ़ा । थोड़ा दूर गया ही था कि उसने सामने ही एक बाघ को देखा । उसने बाघ से पूछा "बड़े भैया को प्रणाम । क्या बात है कि आज आपकी सवारी कहीं गयी नहीं?" बाघ बोला, "कहाँ जाएँ? तीन दिन हुए कोई प्राणी मिला ही नहीं ।" सियार ने कहा, "ऐसे एक ही जगह पर बैठने से क्या मिलेगा? भैया क्या हम समुद्र की ओर चलें? वहाँ बड़े–बड़े समुद्री–जीव पानी की लहरों के साथ उछलकर रेत पर आ गिरते हैं । और कुछ न सही चबाने के लिए चार **मोरंटे** ही मिल जाएंगे ।" सियार ने आस दिखायी । बाघ भी वहाँ बैठा–बैठा ऊब गया था । बोला " अच्छा चलो ।" सियार को साथ ले बाघ समुद्र की ओर चल पड़ा ।

सियार और बाघ दोनो साथ ले समुद्र की ओर निकल पड़े । जाते–जाते रास्ते में वह कुछ **कारोळु** नामक फल तोड़कर ले गया । दोनों समुद्र तक पहुँच गये । बाघ ने कहा, "क्यों सियारभाई कहाँ हैं समुद्री–जीव ? मुझे बड़ी भूख लगी है ।" सियार ने कहा "हम यहाँ रेत पर खड़े रहेंगे । जैसे ही कोई लहर आयेगी फ़ौरन सिर के बल उसमें कूदना होगा । उन लहरों में मिलेंगे । पहले मैं कूदकर दिखाता हूँ ।" जब

एक छोटी लहर आयी तो उसमें वह कूद गया। और एक **कारोळु** मुँह में डालकर कुरुकुरु आवाज़ के साथ खाने लगा। आवाज़ सुनते ही बाघ ने पूछा, "तुम्हारे मुँह में क्या है ? तुम क्या खा रहे हो सियारभैया ?" सियार बोला, "वही। जब लहर में कूद गया तो **मोरंटे** मिल गया। वही खा रहा हूँ।" आगे उसने कहा, " अब जब लहर आयेगी, तो उसमें तुम कूद जाना।" जब लहर आयी तो बाघ उसमें कूद पड़ा लेकिन उसे कुछ न मिला। उसका मुँह छोटा हुआ। बोला, " कुछ भी नहीं मिला।" सियार ने कहा " क्या कुछ भी नहीं मिला ? मैं फिर एक बार देखता हूँ।" सियार फिर एक बार लहर में कूद गया। इस बार भी पहले ही की तरह उसने मुँह में **कारोळु** डाल लिया और कुरुकुरु आवाज़ के साथ खाने लगा। बाघ ने फिर पूछा, "क्या है तुम्हारे मुँह में?" सियार ने कहा, "यह ! यह एक और **मोरंटे** है।" बाघ को आश्चर्य हुआ। उसने सियार से पूछा, "क्यों भाई, ये सिर्फ़ तुम्हें ही क्यों मिलते हैं ?" सियार बोला, "अच्छा, अब जब बड़ी लहर आयेगी न तब तुम उसमें ज़ोर से छलाँग लगा दो, तो तुम्हें भी ज़रूर मिल जायेगा।"

बाघ ने सोचा, शायद यही ठीक रहेगा। और जब बड़ी लहर आयी तो वह उसमें कूद पड़ा। लहर के वेग में वह बहुत दूर तक बह गया। सियार ने ज़ोर से आवाज़ लगायी, "जाओ, जाओ ऐसे ही दूर तक जाओ।अब वापस मत आना।" सियार ने किनारे से समुद्र के बीच जाते हुए बाघ को देखा और बोला, "समुद्र को मैंने एक बाघ को दान में दे दिया।" और खुशी–खुशी वहाँ से सीधे जंगल की ओर भाग गया।

शब्दार्थ – कारोळु = छोटी पहाड़ी पर मिलनेवा एक छोटा फल , मोरंटे = एक प्रकार की छोटी मछली

तुम्हें याद करते ही मृत्यु !

देवी सीता को रात्तसराज रावण चुराकर ले गया। श्रीराम रात्तसों पर विजय प्राप्तकर पत्नी को वापस ले आने के लिए निकल पड़े। वानरों को अपने साथ लेकर समुद्रपर सेतुबंधन किया। सेतु–निर्माण के समय आसपास के गावों से भी लोग ही नहीं बल्कि उनके साथ पशु– पत्ती भी आये और सबने रामजी की मदद की। सेतु के लिये पत्थर–मिट्टी ढोकर लाने में सबने सहायता प्रदान की।

जब रामजी ने आँखों में पानी लाकर अपनी पत्नी को खोने से हुए कष्ट के संबंध में बताया तो कौन ऐसा होगा जिसने उनकी सहायता के लिए हाथ न बढ़ाया हो ? लेकिन जब मुर्गे से कहा गया तो उसने कहा, "मेरे सिर पर तुर्रा है। पत्थर–मिट्टी आदि ढोना मुझसे न हो सकेगा।" यह सुनकर रामजी को गुस्सा आया और उन्हों ने उसे शाप दे दिया, "जब तुझे याद किया जाएगा तब तेरी मौत हो जायेगी।"

इस तरह मुर्गे को शाप मिलने की वजह से जब–जब मुर्गे को याद किया जाता है तब–तब वह मर जाता है। जब कभी–कभार ही आनेवाले रिश्तेदार आते हैं, या अचानक यदि कोई आ जाता है तब और व्यंजन बनाने के लिए और कुछ न हो तब मुर्गे की याद आती है और तब ज़रूर उसे मौत आती है।

कुदुंबळु पत्ती ने आवाज़ दी

राहु के लिए पत्थर, गुलिग के लिए वन यह सब हम सुन चुके हैं। भूत, प्रेत, पिशाच आदि पत्थर या किसी पेड़ पर वास करते हैं। कई बार तो उनके किसी पत्थर में स्थापित होने में विश्वास किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि ऐसे पत्थर को हमें छूना नहीं चाहिए, । किसी तरह से उसे अपवित्र नहीं करना चाहिए। ज़्यादातर लोग डर के कारण उस ओर देखते तक नहीं। (पर अनजाने में यदि कोई उसपर पेशाब भी करे तो भी पूछेगा कौन?)

एक बार इस विश्वास को परखने के लिए ऐसे एक पत्थर पर बैठकर एक आदमी मल-मूत्र विसर्जन किया करता था। इससे परेशान होकर उसमे वास करनेवाला भूत और कोई उपाय न जानकर जैसे ही वह आदमी उसपर बैठता भूत उस पत्थर को छोड़ दूर चला जाता। भूत उस आदमी से डरकर पत्थर छोड़कर चला जाता था, यह बात हर रोज़ एक कुदुंबळु पत्ती देखता था।

कुदुंबळु पहाड़ या जंगल में रहनेवाला छोटा-सा पत्ती है। उसका मांस बहुत ही स्वादिष्ट होता है। वह जहाँ बैठा होता है वहाँ से उठते समय 'बुव्व' आवाज़ कर उड़ता है। इस पत्ती के बारे में 'पाड्दन' मे भी उल्लेख है।

ऐसे ही एक बार पत्थर छोड़कर दूर जा खड़े रहनेवाले भूत से कुदुंबळु पत्ती ने पूछा, "क्यों जी, क्या हुआ ? तुम अपनी जगह छोड़ यहाँ आकर क्यों खड़े हो?" भूत ने कुदुंबळे पत्ती से अपने अपमान के बारे में कहा। छोटे-से कुदुंबळु ने भूत को धीरज बँधाते हुए कहा, "ओहो ! यह बात है ! कल देखेंगे। जब वह आदमी आकर पत्थर पर बैठेगा मैं वहाँसे आवाज़ करते हुए उठूंगा। तुरंत तुम उस आदमी को पकड़ लेना।"

दूसरे दिन वह आदमी आया। हमेशा की तरह वह उस पत्थर पर बैठा। मौका मिलते ही कुदुंबळु 'बुव्व' आवाज़ करते हुए वहाँ से उठा। अचानक आयी इस आवाज़ को सुन वह आदमी डर गया। डर के मारे सफ़ेद हो गया। जब वह डर गया तब भूत को उसे पकड़ने का मौका मिला। इस तरह छोटे-से कुदुंबळु ने भूत की सहायता की।

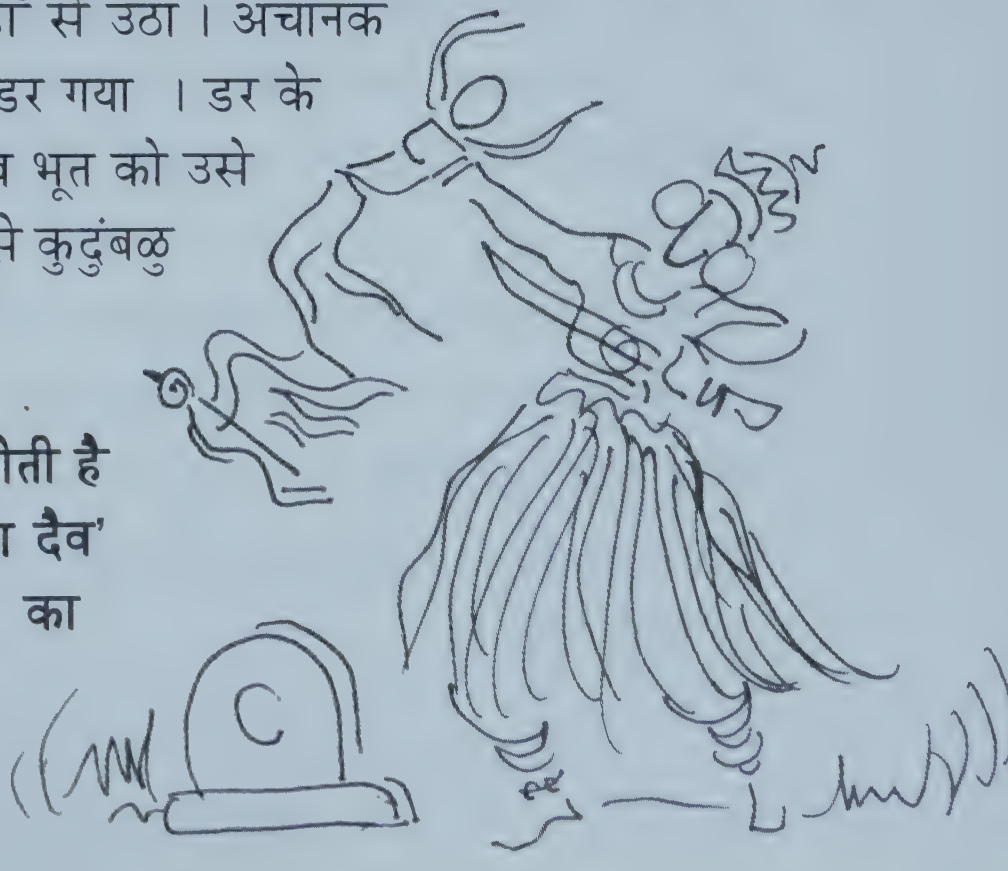

वि. सू. – 'तुलुनाडु' में भूताराधना होती है। राहु तथा गुलिग इन दोनों को 'भूत या दैव' माना जाता है। पाड्दन = भूताराधना का गाना

इसमें से बचा तो चार नहीं तो तीन

लड़की को देखने कुछ लोग आये थे। उस समय के रिवाज़ के अनुसार लड़कीवाले, इस कार्य से आनेवाले लोगों की परीक्षा उनकी बोल–चाल, उनका खान–पान आदि की दृष्टि से किया करते थे। आनेवालों में लड़के की कुछ ज़्यादा ही परीक्षा होती थी। यदि लड़कीवालों को उसमें कुछ आपत्ति लगे तो या कुछ ठीक न लगे तो बड़ी मुश्किल हो जाती थी।

वधू के घरवालों ने विशेष भोजन बनाया पर, साथ ही उन्होंने सिर्फ़ वर को खिलाने के लिए एक मिर्च का काढ़ा भी बनाया। बाकियों को इस बारे में कुछ पता न था। वर को वह इतना तीखा लगा कि उससे सहा नहीं जा रहा था। पर वह किसीसे कुछ कह भी नहीं पा रहा था।

भोजन करते समय वधू के पिता ने वर से पूछा, "तुम कितने भाई–बहन हो ?" उस समय वर के लिए साँस लेना भी मुश्किल लग रहा था और वह अपने को रोक न पाया और वह बोला, "यदि इससे मैं बच जाऊँ तो चार नहीं तो सिर्फ़ तीन !"

लोकरत्तक केकड़ा

कहते हैं कि इस पृथ्वी के चारों ओर समुद्र है । जितने प्रकार के जीव-जंतु ज़मीन पर हैं उतने ही समुद्र में भी हैं । जैसे कि यदि ज़मीन पर कुत्ता है तो समुद्र में जल-कुत्ता, यदि ज़मीन पर हाथी है तो समुद्र में जल-हाथी। इस तरह समुद्र में सिर्फ़ मछलियाँ ही नहीं होतीं ।

समुद्र में कितनी बड़ी और कितनी छोटी मछलियाँ होती हैं यह नहीं कह सकते । कहते हैं एक ही मछली इतनी बड़ी होती है जो कि इस पृथ्वी को घेरे हुए है । इसलिए वह कितनी बड़ी है यह कहना बिल्कुल असाध्य है । वह तब तक इतनी बड़ी होती जाएगी जब तक उसकी पूँछ उसके मुँह तक नहीं आती । कहते हैं कि जब उसकी पूँछ उसके सिर तक पहुँच जाएगी तब सब कुछ खत्म हो जाएगा । उस दिन इस लोक में प्रलय हो जाएगा । तब न यह यह भूमि होगी और न इसपर रहनेवाले जीव-जंतु । चारों ओर सिर्फ़ पानी ही पानी होगा ।

पर ऐसा नहीं होना चाहिए ना ! इस लोक पर जीवन रहना ही चाहिए । इसलिए एक बहुत बड़ा केकड़ा इसी इंतज़ार में बैठा होता है कि जब इस मछली की पूँछ सिर तक बढ़े तब वह 'कटक' से उसे तोड़ डाले । वह केकड़ा कभी उस मछली की पूँछ को उसके सिर तक बढ़ने ही देता । इस तरह वह इस लोक की रत्ता करता है ।

ऊख खाकर आने के लिए कहा तो चने खाकर आ गया ।

एक बार एक नानी के यहाँ उसका नाती लंबे समय बाद आया । उसे देखे बहुत दिन हो चुके थे । जब वह आया तो नानी उसे देखती ही रह गयी । पर जब नाती ने अपनी बत्तीसी दिखायी तब उसकी नानी को उबकाई–सी आयी । लंबे समय से उसने दांत साफ़ किए ही नहीं थे ! उसके दाँत **'केपळ'** फल की तरह लाल थे । नानी को आस लगी कि अपने नाती के दाँत सफ़ेद हों । दाँत साफ़ करने के लिए कहें तो शायद उसे अच्छा न लगता । इसलिये नानी ने एक उपाय किया ।

नानी ने अपने नाती से कहा, "देख बेटा, वहाँ एक दुकान है जहाँ ऊख बेचते हैं । वे ऊख बहुत ही मीठे होते हैं । मैं तुम्हें पैसे देती हूँ तुम जाकर एक टुकड़ा ऊख लेकर खा लेना ।" इतना कहकर नानी ने अपने बटुए से पैसे निकालकर अपने नाती को दिये ।

नाती के हाथ में पैसे आये ही थे कि वह फ़ौरन दुकान की ओर दौड़ा । वहाँ जाकर उसने कुछ और ही कर दिया । उसने सोचा कि ऊख ले लूँ तो उसे चबाकर खाना पड़ेगा । यह कौन करेगा ! इससे तो अच्छा है कि कुछ चना ही खरीद लूँ । यह सोचकर उसने चना खरीदकर वहीं खा लिया और फिर घर लौट आया ।

नानी घर पर राह देख रही थी । नाती ने लौटते ही कहा " नानी, नानी मैंने ऊख नहीं खरीदा, उसके बदले चना खरीदा और खा लिया । इतना कहकर उसने अपना मुँह खोला । नानी ने अपने नाती को देखा , उसके पीले दाँतों को देखा और बेचारी सोचने लगी अब मैं इसे क्या कहूँ ।

उस दिन से "ऊख खाकर आओ कहा तो चना खाकर आया" यह कहावत जारी हो गयी ।

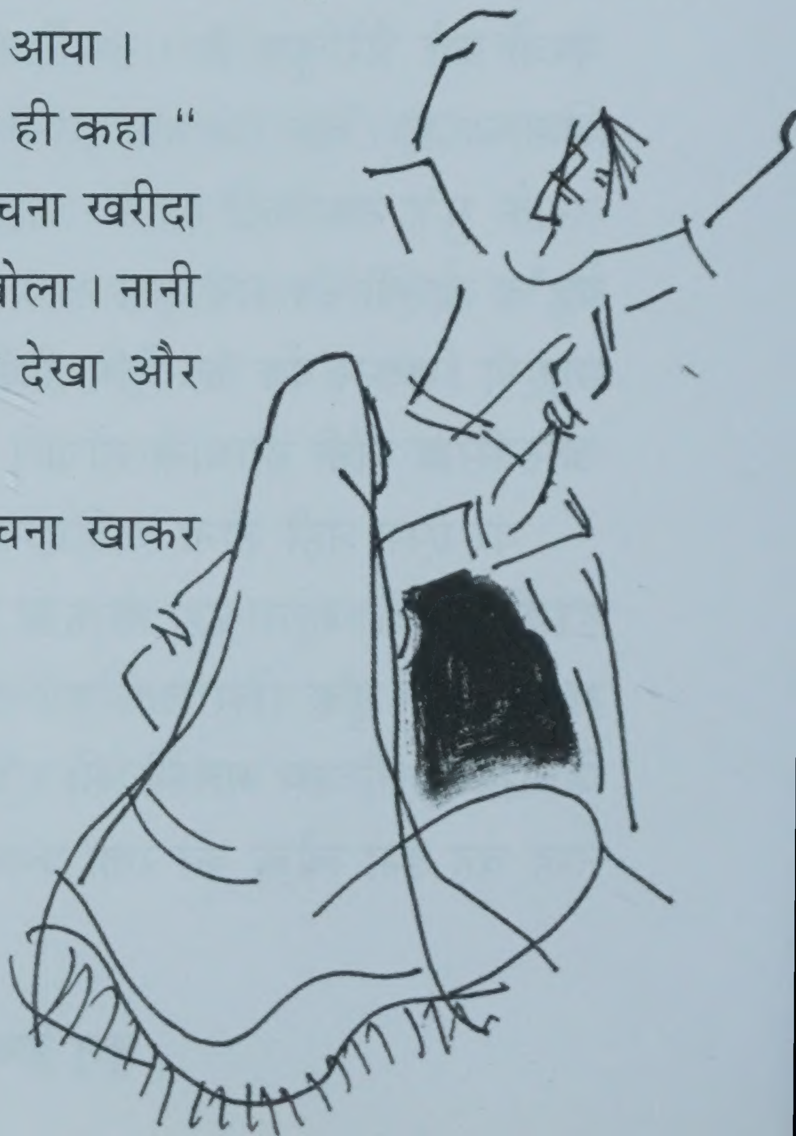

अपार जीवनानुभव से प्राप्त देहातियों की बोलचाल अपनी समय प्रज्ञा तथा सांदर्भिक विवेक से हमें चकित करती है । हास्य की रोशनी फैलाती है । देहातियों की कहावतें, मुहावरे, आस्थाएँ, आचरण, उनकी पहचान आदि उनकी जीवनशैली की विविधता के पीछे किसी न किसी लघुकथा का पटाखा अवश्य छुपा होता है ।
कवि, लोकसाहित्य के विद्वान तथा कथाकार डॉ. वामन नंदावर ने बचपन से लेकर अपने जीवन के विविध संदर्भों में जो-जो प्रसंग सुने उनकी पृष्ठभूमि के विवरणों को कथारूप में संजोकर पटाखों की माला क्े रूप में पिरोकर यहाँ प्रस्तुत किया है। तुलु जीवन शैली से प्राप्त ये हास्यप्रधान लघुकथाएँ उनकी मूलत: तुलु में लिखीं और फिर कन्नड़, अंग्रेज़ी तथा हिन्दी में अनुवादित कर संकलन के रूप में यहाँ प्रस्तुत की गयी हैं । ये वैविध्यपूर्ण हास्य लघुकथाएँ बच्चे व बड़े पढ़ें, स्वच्छंद होकर हँसें और आराम से बैठकर इन कथाओं के मध्य की बुद्धिमत्ता तथा समझदारी और नीतियों को समझकर उनका मनन करें यह आज के आधुनिक समाज के लिये अत्यधिक आवश्यक है ।

प्रो. बि. ए. विवेक रै

करनाटक तुलु साहित्य अकाडेमि
मंगलूरु

रेट : Rs. 75